# प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

मासिक

भाद्रपद-आश्विन, विक्रम संवत् 2083 (सितम्बर-2026) पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

## सांस्कृतिक एकता
## हिन्दी की भूमिका

- ♦ प्राचीन मंदिर : भारत की अमर सांस्कृतिक विरासत
- ♦ संघ में घोष वादकों का इतिहास महत्व एवं विकास यात्रा
- ♦ जलवायु परिवर्तन से भीषण संकट में पौध-प्रजातियां
- ♦ 'त्योहारों और बदलाव' का महीना सितम्बर

# गोपाल सरस्वती विद्या मंदिर

## वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रायबरेली

GOPAL SARASWATI VIDYA MANDIR RAEBARELI

### शिक्षा, संस्कार और उत्कृष्ट परिणामों की गौरवशाली परंपरा

जनपद गौरव गोपाल सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रायबरेली सभी देशवासियों का **हार्दिक अभिनन्दन** करता है।

उत्कृष्ट शिक्षा | उत्तम संस्कार | शानदार परिणाम

### हमारी विशेषताएँ

- सी.बी.एस.ई. बोर्ड से विद्यालय संचालित।
- भव्य भवन एवं आधुनिक सुसज्जित विज्ञान एवं कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ तथा स्मार्ट क्लास।
- लिफ्ट की सुविधा उपलब्ध।
- विशाल क्रीड़ा प्रांगण।
- बोर्ड परीक्षाओं में शानदार परिणाम।
- संस्कारक्षम वातावरण में विद्यार्थियों के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण।
- विभिन्न पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय।
- व्यवस्थित छात्रावास।
- आधुनिक वातानुकूलित सभागार।
- एन.सी.सी., स्काउट/गाइड की उत्तम व्यवस्था एवं राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित स्काउट छात्र।
- शासन द्वारा विद्यालय को 'A' श्रेणी प्रमाण-पत्र।
- प्रशासनिक सेवाओं में छात्रों का चयन।

विज्ञान प्रयोगशाला

कंप्यूटर प्रयोगशाला

स्मार्ट क्लास

विशाल क्रीड़ा प्रांगण

पुस्तकालय

छात्रावास

वातानुकूलित सभागार

## गोपाल सरस्वती विद्या मंदिर, रायबरेली

Email: gopal.svm.rbl@gmail.com
Website: www.gopalsvm.org

**विमल तलरेजा**
प्रबंधक

**अरविन्द सिंह चौहान**
प्रधानाचार्य

# प्रेरणा विचार

वर्ष -4, अंक - 09

**RNI No. UPHIN/2023/84344**



**संरक्षक**
अनिल त्यागी

**प्रबंध निदेशक**
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

**सलाहकार मंडल**
श्याम किशोर

**संपादक**
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

**कार्यकारी संपादक**
डॉ. प्रियंका सिंह

**प्रबन्ध संपादक**
मोनिका चौहान



अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित



**संपादकीय कार्यालय**
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in



इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक


## इस अंक में

सांस्कृतिक एकता में हिन्दी की भूमिका 08

Gen-Z की शिकायतें जायज वे एंटी-नेशनल नहीं 14

जलवायु परिवर्तन से भीषण संकट में पौध-प्रजातियां 26

- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : नेतृत्व, कर्तव्य और धर्म की शाश्वत प्रेरणा..............05
- सूखे की आशंका से भरा यह वर्ष-जिम्मेदार कौन?..............................07
- सूचना के सागर में विवेक का दीपक है गुरु........................................10
- नागरिकता के राष्ट्रीय रजिस्टर की जरूरत........................................12
- वंदे मातरम् के राष्ट्रभाव से विमुख कांग्रेस........................................16
- विकसित और आत्मनिर्भर भारत की दिशा तय करता सौर ऊर्जा नीति.........18
- प्राचीन मंदिर : भारत की अमर सांस्कृतिक विरासत..............................19
- हड्डियों और जोड़ों को स्वस्थ रखने के लिए नियमित करें व्यायाम .............22
- संघ में घोष वादकों का इतिहास महत्व एवं विकास यात्रा.........................24
- डिजिटल भारत में महिलाओं के अधिकार...........................................28
- 'त्योहारों और बदलाव' का महीना सितम्बर..........................................30
- बंदूक से हैंडलूम तक ......................................................................32
- आधुनिकता की दौड़ में कहीं खो न जाए हमारी संस्कृति .........................34

# भारतीयता का पथ विकास के साथ संस्कारों की यात्रा

भारत की पहचान केवल उसकी प्राचीन सभ्यता और गौरवशाली इतिहास में नहीं, बल्कि उस जीवंत चेतना में है जो समय के साथ बदलते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़ी रहती है। स्वतंत्रता से लेकर आज के 'विकसित भारत' के संकल्प तक की यात्रा इसी भारतीय चेतना की यात्रा है।

स्वतंत्रता हमें सहज प्राप्त नहीं हुई। असंख्य ज्ञात-अज्ञात क्रांतिकारियों, स्वयंसेवकों, सामाजिक संगठनों और राष्ट्रनिष्ठ व्यक्तित्वों के त्याग एवं समर्पण ने उस नींव को मजबूत किया, जिस पर आज का भारत खड़ा है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, अंतरिक्ष, रक्षा, डिजिटल अर्थव्यवस्था और आधारभूत संरचना के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। किन्तु विकास का अर्थ केवल आर्थिक समृद्धि और तकनीकी प्रगति नहीं है। वास्तविक विकास वही है जिसमें मानवीय संवेदना, सामाजिक समरसता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक चेतना साथ-साथ आगे बढ़ें। विकसित भारत का सपना तभी सार्थक होगा, जब आधुनिकता और परंपरा एक-दूसरे की विरोधी न होकर पूरक बनें।

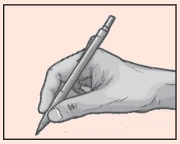

आज तकनीक ने जीवन को गति दी है, पर इसी गति के बीच अपनी भाषा, लोकपरंपराओं, पारिवारिक संस्कारों और संवाद की संस्कृति को बचाए रखना भी हमारी जिम्मेदारी है। भारतीय परंपरा ने सदैव परिवर्तन को स्वीकार किया, लेकिन परिवर्तन के साथ विवेक को भी महत्व दिया। शास्त्रार्थ की हमारी परंपरा बताती है कि विचारों का मतभेद संवाद और ज्ञान का माध्यम हो सकता है। आज जब संवाद की जगह त्वरित प्रतिक्रियाएँ बढ़ रही हैं, तब इस परंपरा की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। पर्यावरण का प्रश्न भी हमारी सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा है। प्रकृति हमारे लिए केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार रही है। बढ़ता तापमान, जल संकट और अनियमित मौसम हमें सचेत कर रहे हैं कि विकास की दिशा प्रकृति के संतुलन को ध्यान में रखकर तय करनी होगी। कम उपयोग, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण जैसे छोटे प्रयास भी सामूहिक रूप से बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

इसी प्रकार युवा भारत की सबसे बड़ी शक्ति हैं। उनकी ऊर्जा, प्रतिभा, नवाचार और तकनीकी क्षमता यदि अनुशासन, चरित्र और राष्ट्रबोध से जुड़ जाए, तो विकसित भारत का संकल्प गति प्राप्त कर सकता है। हमारी लोकसंस्कृति और लोकगीत भी इस यात्रा में महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनमें पीढ़ियों का अनुभव और हमारी सामूहिक स्मृति सुरक्षित है। आज आवश्यकता अतीत में लौटने की नहीं, बल्कि अतीत से शक्ति लेकर भविष्य का निर्माण करने की है। हमें विज्ञान चाहिए, विवेक के साथ तकनीक चाहिए, मानवीयता के साथ प्रगति चाहिए, पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ और वैश्विक दृष्टि चाहिए अपनी भारतीय पहचान के आत्मविश्वास के साथ।

प्रेरणा विचार का यह अंक इसी विश्वास को स्वर देता है कि भारत का भविष्य केवल नीतियों और परियोजनाओं से नहीं, बल्कि जागरूक, संवेदनशील और संस्कारित नागरिकों से बनेगा। आइए, स्वतंत्रता की विरासत को विकास की ऊर्जा और संस्कृति की चेतना से जोड़ते हुए ऐसे भारत के निर्माण में सहभागी बनें, जो आधुनिक भी हो और अपनी आत्मा से गहराई से जुड़ा हुआ भी।

भारतीय परंपरा ने सदैव परिवर्तन को स्वीकार किया, लेकिन परिवर्तन के साथ विवेक को भी महत्व दिया। शास्त्रार्थ की हमारी परंपरा बताती है कि विचारों का मतभेद संवाद और ज्ञान का माध्यम हो सकता है। आज जब संवाद की जगह त्वरित प्रतिक्रियाएँ बढ़ रही हैं, तब इस परंपरा की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। पर्यावरण का प्रश्न भी हमारी सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा है। प्रकृति हमारे लिए केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार रही है। बढ़ता तापमान, जल संकट और अनियमित मौसम हमें सचेत कर रहे हैं कि विकास की दिशा प्रकृति के संतुलन को ध्यान में रखकर तय करनी होगी। कम उपयोग, पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण जैसे छोटे प्रयास भी सामूहिक रूप से बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

# श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
# नेतृत्व, कर्तव्य और धर्म की शाश्वत प्रेरणा

**अभय श्रीवास्तव**
लेखक


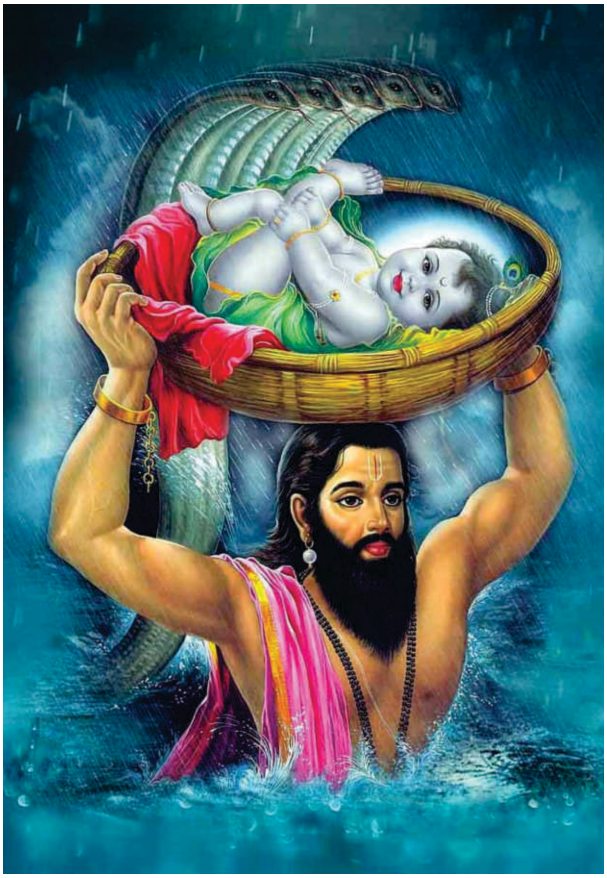

"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।"

श्रीकृष्ण केवल भारतीय आस्था के आराध्य नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन के ऐसे विराट व्यक्तित्व हैं, जिनके जीवन में प्रेम भी है और नीति भी, करुणा भी है और पराक्रम भी, कर्तव्य भी है और संकट में नेतृत्व करने की अद्भुत क्षमता भी। जन्माष्टमी केवल श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव नहीं, बल्कि उस चेतना के जागरण का पर्व है, जो मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य, धर्म और कर्तव्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

आज जब भारत की युवा पीढ़ी एक ऐसे समय में आगे बढ़ रही है, जहाँ तकनीक ने संसार को अत्यंत निकट ला दिया है, सूचनाओं का विस्फोट हो रहा है और अवसरों के साथ असमंजस भी बढ़ रहा है, तब श्रीकृष्ण का जीवन और श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

**संकट में जन्मी आशा :** श्रीकृष्ण का जन्म किसी राजमहल की सुख-सुविधाओं में नहीं, बल्कि कारागार में हुआ। चारों ओर भय था, अत्याचार था और मृत्यु का साया था। लेकिन उसी अंधकार में आशा का जन्म हुआ।यह प्रसंग आज के युवा के लिए गहरा संदेश देता है- परिस्थितियां हमारे भविष्य का निर्धारण नहीं करतीं; हमारा साहस, हमारा चरित्र और हमारे कर्म करते हैं।

आज का युवा अनेक प्रकार के दबावों से गुजर रहा है-शिक्षा और रोजगार की चिंता, प्रतिस्पर्धा, सामाजिक अपेक्षाएं और आभासी संसार में निर्मित सफलता की चमक। ऐसे समय में कृष्ण का जीवन सिखाता है कि कठिनाइयों से भागना समाधान नहीं है। कठिन परिस्थितियों के बीच अपने कर्तव्य को पहचानना ही जीवन की वास्तविक परीक्षा है।

**कर्मयोग : फल से अधिक कर्तव्य :** श्रीमद्भगवद्गीता का सर्वाधिक प्रसिद्ध संदेश है-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।"

मनुष्य का अधिकार कर्म करने में है, उसके फल पर नहीं। इसका अर्थ कर्म के परिणाम की उपेक्षा करना नहीं, बल्कि परिणाम के भय अथवा मोह के कारण अपने कर्तव्य से विमुख न होना है। आज सफलता को प्रायः धन, पद, प्रसिद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा से मापा जाता है। श्रीकृष्ण सफलता की इससे कहीं व्यापक परिभाषा देते हैं। श्रेष्ठ जीवन वह नहीं जिसमें उपलब्धियां अधिक हों; श्रेष्ठ जीवन वह है जिसमें उपलब्धियों के पीछे उद्देश्य भी हो।

विद्यार्थी का धर्म ज्ञान अर्जित करना है। युवा का धर्म स्वयं को सक्षम बनाना है। शिक्षक का धर्म पीढ़ियों का निर्माण करना है। किसान का

धर्म अन्न उत्पन्न करना है। सैनिक का धर्म राष्ट्र की रक्षा करना है। नागरिक का धर्म अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म को ईमानदारी और उत्कृष्टता से करता है, तब राष्ट्र स्वतः सशक्त होता है।

**संकट में नेतृत्व :** कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण ने स्वयं शस्त्र नहीं उठाया। उन्होंने अर्जुन का सारथी बनना स्वीकार किया। यह भारतीय नेतृत्व-दर्शन का अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है।

सच्चा नेता वह नहीं जो केवल आदेश देता है; सच्चा नेता वह है जो संकट में दिशा दिखाए, भ्रमित मनुष्य में आत्मविश्वास जगाए और उसे अपने कर्तव्य का बोध कराए। अर्जुन के हाथ में गांडीव था, सामर्थ्य था, लेकिन मोह और संशय ने उसके विवेक को ढक दिया था। श्रीकृष्ण ने उसके स्थान पर निर्णय नहीं लिया। उन्होंने उसे ज्ञान दिया, उसके प्रश्न सुने और उसे स्वयं निर्णय लेने योग्य बनाया।

यही आज के समाज में संवाद की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। असहमति होना स्वाभाविक है, लेकिन असहमति को संघर्ष में बदल देना समाधान नहीं है। परिवार में पीढ़ियों के बीच दूरी हो, समाज में विचारों का मतभेद हो अथवा राष्ट्र के सामने कोई जटिल प्रश्न-संवाद ही वह मार्ग है जो मनुष्य को विरोध से विमर्श और विमर्श से समाधान की ओर ले जाता है।

कृष्ण ने अर्जुन को मौन रहने के लिए नहीं कहा; उन्होंने उसके प्रश्नों का उत्तर दिया। यही भारतीय परंपरा की विशेषता है कि प्रश्न करो, विचार करो, संवाद करो और फिर कर्तव्य का मार्ग चुनो।

**कर्म में कौशल और जीवन में अनुशासन :** गीता कहती है- "योगः कर्मसु कौशलम्।" अर्थात् कर्म में कुशलता ही योग है।

भारत की युवा शक्ति के सामने आज अभूतपूर्व अवसर हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्यमिता और ज्ञान के नए क्षेत्र युवाओं के लिए संसार के द्वार खोल रहे हैं। लेकिन प्रतिभा को अनुशासन चाहिए, ज्ञान को चरित्र चाहिए और शक्ति को विवेक चाहिए।

युवा पीढ़ी के लिए श्रीकृष्ण का संदेश स्पष्ट है- आधुनिक बनो, लेकिन अपनी जड़ों से मत कटो। आगे बढ़ो, लेकिन अपने संस्कारों को पीछे मत छोड़ो। प्रतिस्पर्धा करो, लेकिन चरित्र से समझौता मत करो।

तकनीक हमारे हाथ में साधन होनी चाहिए, जीवन की दिशा निर्धारित करने वाली शक्ति नहीं।

**प्रेम, समरसता और परिवार :** श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व केवल कुरुक्षेत्र के रणनीतिकार तक सीमित नहीं है। वे गोकुल के कान्हा हैं, सुदामा के सखा हैं, गोवर्धन उठाकर समुदाय की रक्षा करने वाले कृष्ण हैं। उनके जीवन में शक्ति और संवेदना का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है।

आज परिवार और समाज अनेक नए दबावों से गुजर रहे हैं। पीढ़ियों के बीच संवाद की कमी, बढ़ता व्यक्तिवाद और जीवन की तेज गति परिवारों के भीतर दूरी पैदा कर रही है। ऐसे समय में कुटुंब प्रबोधन का विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है-परिवार केवल साथ रहने की व्यवस्था नहीं, बल्कि संस्कार, संवेदना और उत्तरदायित्व का पहला विद्यालय है। इसी प्रकार श्रीकृष्ण का जीवन सामाजिक समरसता का भी संदेश देता है। उन्होंने व्यक्ति का मूल्य उसकी जन्म-परिस्थिति से नहीं, उसके गुण, कर्म और संबंधों से देखा। भारत की शक्ति इसी में है कि विविधताओं के बावजूद हम एक सांस्कृतिक परिवार की भावना को जीवित रखें।

**जन्माष्टमी : कृष्ण के आदर्शों से राष्ट्र निर्माण तक :** आज का युवा केवल भविष्य का नागरिक नहीं है; वह वर्तमान भारत के निर्माण का सक्रिय सहभागी है।

गीता का एक और अमर संदेश है-

"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्"

मनुष्य को स्वयं अपने द्वारा अपना उत्थान करना चाहिए, स्वयं को नीचे नहीं गिराना चाहिए।

यह आत्मनिर्भरता का भी संदेश है और आत्मानुशासन का भी। किसी युवा की सबसे बड़ी प्रतिस्पर्धा किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं, बल्कि अपने कल के रूप से है। यदि आज वह कल से बेहतर बनने का प्रयास करता है, तो वही वास्तविक प्रगति है। श्रीकृष्ण का जीवन भारत की विविधता में एकात्मता का भी प्रतीक है। मथुरा, गोकुल, वृंदावन, द्वारका और कुरुक्षेत्र उनका जीवन भारत की अनेक भौगोलिक और सांस्कृतिक धाराओं को जोड़ता है। इसलिए कृष्ण किसी एक क्षेत्र, भाषा या वर्ग के नहीं, सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं।

जन्माष्टमी का वास्तविक संदेश भी यही है कि कृष्ण का जन्म केवल एक ऐतिहासिक घटना के रूप में न मनाया जाए, बल्कि उनके विचार हमारे जीवन में जन्म लें।

- जब हम अन्याय के सामने साहस चुनते हैं-वहां कृष्ण हैं।
- जब कठिन परिस्थिति में कर्तव्य चुनते हैं - वहां कृष्ण हैं।
- जब असहमति के बीच संवाद चुनते हैं - वहां कृष्ण हैं।
- जब सफलता के साथ विनम्रता और शक्ति के साथ करुणा चुनते हैं - वहां कृष्ण हैं।

और जब अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज तथा राष्ट्र के कल्याण के लिए कर्म करते हैं-वहां भी कृष्ण हैं।

आइए, इस जन्माष्टमी पर हम केवल कृष्ण का जन्मोत्सव न मनाएं, बल्कि अपने भीतर साहस, विवेक, कर्तव्य, करुणा, समरसता और राष्ट्रभाव का जन्म करें।

भारत का भविष्य केवल नई तकनीकों, बड़ी अर्थव्यवस्था और आधुनिक संस्थानों से नहीं बनेगा। वह बनेगा उन करोड़ों नागरिकों के चरित्र से, जो अपने व्यक्तिगत स्वप्नों को राष्ट्र के स्वप्न से जोड़ेंगे।

यही जन्माष्टमी का वास्तविक उत्सव है। गीता को केवल पढ़ें नहीं, जीवन में उतारें। यही श्रीकृष्ण की शाश्वत प्रेरणा है।

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।"

– श्रीमद्भगवद्गीता 3.21

राधे राधे।

# सूखे की आशंका से भरा यह वर्ष-जिम्मेदार कौन?

**अशोक चौधरी**
**अध्यक्ष, आहुति संस्था, अलीगढ़**

बहुत चिंताजनक समाचार से आलेख प्रारंभ कर रहा हूँ। इस वर्ष में भारत समेत दुनियाभर में सूखे की आशंका है - यह चेतावनी भारतीय मौसम विभाग के बाद अब विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ने विगत मंगलवार 2, जून को देर रात वैश्विक जलवायु को लेकर जारी की है। संयुक्त राष्ट्र (UN) की इस मौसम एजेंसी के मुताबिक, प्रशांत महासागर में तेजी से गर्म हो रहे समुद्री जल के कारण जून से अगस्त के बीच अल नीनो बनने की आशंका 80 प्रतिशत है। नवंबर तक इसके 90 प्रतिशत या उससे ज्यादा बने रहने की आशंका है।

प्रशांत महासागर के भूमध्यरेखीय क्षेत्र में जब समुद्री हवाएं कमजोर पड़ती हैं, तो दक्षिण अमेरिकी तट का पानी असामान्य रूप से गर्म होने लगता है। समुद्र के पानी के गर्म होने को अल नीनो कहते हैं। यह वैश्विक हवाओं और बादलों के पैटर्न को बदलकर दुनियाभर के मौसम को तहस-नहस कर देता है। मौसम विभाग के मुताबिक देश में मानसून के दौरान सामान्य से कम बारिश होने की संभावना है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार, अलनीनो आगे चलकर और मजबूत हो सकता है। इससे भारत समेत दुनियाभर में सूखा, बाढ़, समुद्री-स्थलीय हीटवेव और मौसम के खतरनाक रूप देखने को मिल सकते हैं। विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार, अलनीनो के बावजूद भारत में मानसून बच सकता है, यदि ये दो सिस्टम एक्टिव रहें-

**इंडियन ओशन डायपोल (IOD)** : इसे हिंद महासागर का अल नीनो भी कहते हैं। यदि इसका फेज पॉजिटिव हो, तो यह अल नीनो के सूखे के प्रभाव को पूरी तरह खत्म कर भारत में अच्छी बारिश करा सकता है।

**मैडेन-जूलियन ऑस्सिलेशन (MJO)** : यह बादलों और हवाओं का एक वैश्विक चक्र है जो भूमध्य रेखा पर घूमता रहता है। जब यह भारत के ऊपर से गुजरता है, तो कमजोर मानसून में भी भारी बारिश के स्पेल (दौर) लेकर आता है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन के वैज्ञानिकों के मुताबिक, समुद्र की सतह के नीचे का पानी सामान्य से 6°C तक ज्यादा गर्म मिला है। यह चिंताजनक है। समुद्र में जमा यही अतिरिक्त ऊष्मा सतह को गर्म कर रही है, जिससे अलनीनो को रफ्तार मिल रही है। इससे पहले साल 2023-24 का अलनीनो इतिहास के पांच सबसे शक्तिशाली दौर में शामिल था, जिसने 2024 में वैश्विक तापमान के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। फिर भी हमारे भारत के ऋषि महर्षियों ने अपनी तप साधना से इस परिस्थिति से भी बचने का उपाय शास्त्रों में दिया है। योगेश्वर कृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में कहा कि -

'अन्नात्, भवन्ति, भूतानि, पर्जन्यात्, अन्नसम्भवः,
यज्ञात्, भवति, पर्जन्यः, यज्ञः, कर्मसमुद्भवः।।'

अर्थात - प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है। इसी प्रकार मनुस्मृति में भी इसी प्रकार का श्लोक है -

'अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्य मुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नन् ततः प्रजाः '

अर्थात - अग्नि में भली-भाँति दी गई आहुति सूर्य को प्राप्त होती है। सूर्य से ही वर्षा होती है, वर्षा से अन्न उपजता है, जिससे प्रजा का पालन-पोषण होता है। मेरी प्रार्थना है कि इस सूखे के कुचक्र से बचने को सामूहिक अथवा पारिवारिक यज्ञों का आयोजन करें। साथ ही 3R का सिद्धांत अपनाएं अर्थात् कम उपयोग, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण।

**कम उपयोग** : कृपया सिंगल-यूज प्लास्टिक (जैसे पॉलीथीन, डिस्पोजेबल कप) का उपयोग बंद करें। बिजली और पानी की बर्बादी रोकें।

**पुनः उपयोग** (**Reuse**) : ऐसी चीजों का चुनाव करें जिन्हें बार-बार इस्तेमाल किया जा सके, जैसे कपड़े के थैले, कांच की बोतलें और पुराने डिब्बे।

**पुनर्चक्रण** (**Recycle**) : कचरे को सूखा और गीला अलग करें। रीसाइक्लिंग के जरिए कचरे को नई उपयोगी वस्तुओं में बदला जा सकता है। इसके साथ ही -

**ऊर्जा और जल की बचत, बिजली बचाए** : उपयोग में न होने पर लाइट और पंखे बंद कर दें, पुराने बल्बों की जगह एलईडी (LED) लाइट्स का उपयोग करें।

**जल संरक्षण** : ब्रश करते समय या गाड़ी धोते समय नल खुला न छोड़ें। वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting) तकनीक का प्रयोग करें।

**प्रदूषण नियंत्रण और परिवहनसार्वजनिक परिवहन** : व्यक्तिगत वाहनों के बजाय बसों, मेट्रो का उपयोग करें या छोटी दूरी के लिए साइकिल व पैदल चलने की आदत डालें।

**प्रकृति-अनुकूल उत्पाद** : घर की सफाई और व्यक्तिगत देखभाल के लिए हानिकारक केमिकल की जगह प्राकृतिक और इको-फ्रेंडली उत्पादों का चुनाव करें।

हम हिंदू है इस नाते प्रकृति के विरुद्ध जीवन जीना, प्रकृति को हानि पहुंचाना प्रत्येक प्रकार से हमारे देवताओं का अपमान है, पाप है। यह जान कर जीवन जीवें।

# सांस्कृतिक एकता में हिन्दी की भूमिका

**प्रो. उर्विजा शर्मा**
**प्रोफेसर, शम्भु दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद**

भारतभूमि बहुसांस्कृतिक एवं बहुभाषीय है। भारत की यही सांस्कृतिक विविधता इसकी पहचान है। भारत की ऐसी विविधता को एक्य करने हेतु यदि एक भाषा को चयनित किया जा सकता है तो वह निश्चित रूप से हिन्दी ही हो सकती है।

हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता को दर्शाने का, विश्व में अपनी सांस्कृतिक विरासत, राजनैतिक एवं आर्थिक परिदृश्य फैलाने का साधन है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जिस प्रकार से वैश्विक परिदृश्य में उत्तर औपनिवेशिक वाद, और भूमंडलीकरण के उपभोक्तावादी समाज व संस्कृति सामने आती है, उसमें हिन्दी भाषा ही भारत के पूर्व पश्चिम, उत्तर दक्षिण को समेटने की सामर्थ्य रखती है। दक्षिण के गोपाल स्वामी आयंगर ने हिन्दी की ऐसी क्षमता को समझ कर ही इसे संविधान में राजभाषा के रूप में स्वीकृत करने का प्रस्ताव रखा था।

यद्यपि राजनीतिक कारणों से हिन्दी विरोध के स्वर भी देखे जा सकते हैं, किंतु व्यापक रूप से हिन्दी की स्वीकार्यता सारे देश में है। इसका कारण यह भी है कि हिन्दी की प्रतिद्वंदिता न तो किसी प्रांतीय भाषा से है और न ही संस्कृत, प्राकृत, पालि आदि प्राचीन भाषाओं से है। जब संस्कृति की अवधारणा पर विचार करते हैं तो देखते हैं कि संस्कृति मानव का सहज संस्कार है। यह दैहिक एवं वैचारिक समन्वय की वह अवस्था मानी जाती है, जिसमें मानव विकास पाता है। वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में यदि भाषा संस्कार पर विचार किया जाए तो हिन्दी, अन्य भारतीय भाषाओं तथा तमिल, बंगला, तेलुगु, पंजाबी, असमिया से अग्रणी स्थान पर है।

हिन्दी भाषा का विकास शौरसैनी अपभ्रंश से हुआ है। यदि भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करें तो हिन्दी ने न केवल प्राचीन भारतीय भाषाओं संस्कृत, प्राकृत, पालि से शब्द ग्रहण किये वरन अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, जापानी, मंदारिन आदि भाषाओं से भी शब्द लेकर अपनी शब्दावली को समृद्ध किया है। संभवतः यही कारण है कि हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में निरंतर लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। दक्षिण भारत से लेकर पूर्वोत्तर तक हिन्दी भाषी लोग मिल जाएंगे। यह सांस्कृतिक एकता में महत्वपूर्ण पड़ाव है। वस्तुत हिन्दी व्यापकता और महत्ता इसकी बोलियों की क परंपरा में निहित है।

केंद्र से परिधि तक फैलने में है। यह भी प्रशंसनीय है कि भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में निहित बोलियों ने स्वेच्छा से परिनिष्ठित हिन्दी को स्वीकार किया है। इतिहास साक्षी है कि हमारे देश में वाह्य विभिन्नता होते हुए भी यहां आंतरिक एकता, सामाजिक सौहार्द स्थापित करने का कार्य हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य आदिकाल से करता आ रहा है। भक्तिकाल में

संतो की वाणी ने देश को उस समय संबल दिया जब भारतभूमि आततायी शासकों के अत्याचारों से कराह रही थी। रीतिकाल का काव्यगत सौंदर्य हिन्दी का प्रवाह रहा। आधुनिक काल में हिन्दी साहित्यकारों ने अंग्रेजी शासकों पर अपनी लेखनी से प्रहार किया। वर्तमान साहित्य भी अनेक विमर्शों को अपने में समेटे हुए है।

वर्तमान में हिन्दी जनसंचार माध्यमों तथा सिनेमा के माध्यम से जन मानस के हृदय में बसी है। हिन्दी भाषा एवं साहित्य समानता, सौहार्द तथा एकता की गहन अनुभूति से परिपूर्ण होने के कारण अपने में अनूठा है। भारतीय संस्कृति की पहचान बनती हिन्दी अपने साहित्य में भारतीयता को समेटे हुए है।

वर्तमान डिजिटल युग में यूनिकोड के कारण हिन्दी तकनीक से जुड़ रही है। आज के भौतिकता एवं तकनीकी समय में वही भाषा उपयुक्त है जो नवोन्मेष एवं तकनीकी साधनों को स्वीकार करके प्रयोगशील है, हिन्दी इस अर्थ में पूर्णतः तैयार है, किन्तु अभी भी बहुत कार्य शेष है। आज भी विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत कार्य करना शेष है, क्योंकि हिन्दी की पुस्तकों की उपलब्धता अपर्याप्त है। ऐसी अनेक चुनौतियां हैं जिन पर कार्य किया जाना शेष है। तथापि हिन्दी हमारी वैचारिक धरातल का माध्यम ही नहीं अपितु स्वाधीन चेतना का प्रतीक भी है। हमारे संपूर्ण अनुभव एवं सूचनाओं का भी प्रतिनिधित्व करती है। आज फिजी, सुरीनाम, मॉरीशस, जापान, चीन, अमेरिका जैसे देशों में हिन्दी भाषी है।

हिन्दी वर्तमान में विश्व की सर्वाधिक बोली अथवा समझी जाने वाली भाषाओं में शीर्ष स्थान रखती है। हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं –'हिन्दी इसलिये बड़ी नहीं है कि हम में से कुछ लोग इस भाषा में कहानी या कविता लिख लेते हैं या सभी बोल लेते हैं। वह इसलिए बड़ी है कि कोटि-कोटि जनता के हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने में यह भाषा इस देश में सबसे बड़ा साधन हो सकती है।' हिन्दी की शक्ति उसकी संख्या में नहीं बल्कि उसकी ग्रहणशीलता, संप्रेषणीयता तथा व्यापकता में निहित है। यदि हिन्दी भारतीय भाषाओं की विविधता का सम्मान करते हुए आगे बढ़ती है तो वह राष्ट्रीय संवाद को और अधिक मजबूत कर सकती है।

हिन्दी को लेकर हमारा दृष्टिकोण भावनात्मक होने के साथ-साथ संवैधानिक और वैज्ञानिक भी होना चाहिए। भारत की भाषिक विविधता उसकी कमजोरी नहीं वरन उसकी सांस्कृतिक शक्ति है। हिन्दी को इसी भाषाई विविधता का सेतु बनना है। हिन्दी का वास्तविक विकास तभी संभव है जब वह जन भाषा से ज्ञानभाषा, संपर्क भाषा से तकनीक भाषा और साहित्यिक भाषा से वैश्विक डिजिटल भाषा के रूप में विकसित हो। हिन्दी का भविष्य केवल सरकारी नीतियों में नहीं वरन् उसके सहज, सृजनात्मक और गुणवत्तापूर्ण प्रयोग में निहित है।

**वर्तमान में हिंदी जनसंचार माध्यमों तथा सिनेमा के माध्यम से जन मानस के हृदय में बसी है। हिंदी भाषा एवं साहित्य समानता, सौहार्द तथा एकता की गहन अनुभूति से परिपूर्ण होने के कारण अपने में अनूठा है। भारतीय संस्कृति की पहचान बनती हिंदी अपने साहित्य में भारतीयता को समेटे हुए है।**

अन्ततः यही कहा जा सकता है कि हिन्दी हमारे संस्कार, संस्कृति, आचार-विचार, नैतिकता की भाषा है। इसमें भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की सुगंध है। यही कारण है कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा था –'हिन्दी के द्वारा ही सारे देश को एकसूत्र में पिरोया जा सकता है।' हिन्दी सामंजस्य और सामाजिक संस्कृति को स्थापित करने वाली भाषा है, अतः उसे केवल एक दिवस में समेट देना पूर्णतः अनुचित है। हिन्दी केवल राजभाषा न रहे राष्ट्रभाषा भी बने यही न्यायोचित है।

# सूचना के सागर में विवेक का दीपक है गुरु

**मोनिका चौहान**
**स्वतंत्र टिप्पणीकार**

इंटरनेट जानकारी दे सकता है, लेकिन शिक्षक विवेक, संस्कार, अनुशासन, मानवीय संवेदना और सही-गलत में अंतर करने की क्षमता विकसित करता है। गुरु पूर्णिमा केवल गुरु के चरणों में श्रद्धा अर्पित करने का पर्व नहीं है, बल्कि यह उस महान परंपरा को स्मरण करने का अवसर है, जिसने भारतीय संस्कृति में गुरु को ज्ञान और जीवन-दृष्टि का मार्गदर्शक माना। भारत में गुरु का स्थान इसलिए सर्वोच्च रहा है क्योंकि गुरु केवल यह नहीं बताता कि 'क्या जानना है', बल्कि यह भी सिखाता है कि जो जाना है, उसका जीवन में सही उपयोग कैसे करना है।

आज हम ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहां ज्ञान हमारी उंगलियों पर है। मोबाइल उठाइए, इंटरनेट खोलिए और किसी भी प्रश्न का उत्तर कुछ ही सेकंड में सामने आ जाता है। दुनिया की पुस्तकें, शोध, व्याख्यान और विशेषज्ञों की राय हमारे सामने उपलब्ध हैं। आज की युवा पीढ़ी के लिए इंटरनेट एक विशाल ज्ञानकोश बन चुका है। लेकिन सवाल यह है कि क्या जानकारी की यह प्रचुरता हमें वास्तव में ज्ञानवान भी बना रही है? यहीं से गुरु की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस होती है।

**जानकारी और ज्ञान में अंतर :** इंटरनेट हमें बता सकता है कि सफलता पाने के कितने तरीके हैं, कौन-सी किताब पढ़नी चाहिए, कौन-सा कौशल सीखना चाहिए और दुनिया में क्या चल रहा है। लेकिन इंटरनेट हमारे सामने विकल्प रख सकता है, सही विकल्प चुनने का विवेक नहीं दे सकता। ऐसे समय में गुरु की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है। गुरु युवा से कहता है। हर चमकती चीज सोना नहीं होती, हर वायरल बात सच नहीं होती और हर लोकप्रिय व्यक्ति अनुकरण करने योग्य नहीं होता। इंटरनेट सूचना देता है, गुरु उस सूचना को समझने की दृष्टि देता है।

**आज की युवा पीढ़ी को गुरु की सबसे अधिक आवश्यकता क्यों?**

आज का युवा प्रतिभाशाली है, आत्मविश्वासी है और तकनीक के मामले में पिछली पीढ़ियों से कहीं आगे है। वह दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से जुड़ सकता है, नई भाषा सीख सकता है, कोई नया कौशल सीख सकता है और अपने विचारों को पूरी दुनिया तक पहुंचा सकता है। लेकिन इसी डिजिटल दुनिया में उसके सामने कुछ नई चुनौतियां भी हैंकृतुरंत सफलता की चाह, सोशल मीडिया की स्वीकृति पाने की इच्छा, तुलना, दिखावे की संस्कृति और हर बात पर तुरंत प्रतिक्रिया देने की आदत। आज कई बार युवा यह मान बैठता है कि जो मुझे अच्छा लगता है, वही सही है। लेकिन जीवन केवल पसंद और नापसंद से नहीं चलता। उसमें जिम्मेदारी भी है, मर्यादा भी है और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता भी। गुरु इसी अंतर को समझाता है। वह युवा को रोकता है, लेकिन उसकी उड़ान रोकने के लिए नहीं; बल्कि उसे यह सिखाने के लिए कि उड़ान कितनी भी ऊंची हो, दिशा सही होनी चाहिए।

**गुरु केवल शिक्षक नहीं, चरित्र का निर्माता है**

विद्यालय में शिक्षक हमें गणित, विज्ञान, इतिहास या भाषा पढ़ाते हैं। लेकिन एक सच्चा शिक्षक इसके आगे जाकर जीवन पढ़ाता है। वह सिखाता है कि असफलता से घबराना नहीं है। वह बताता है कि सफलता मिलने पर अहंकार नहीं करना है। वह समझाता है कि अपनी स्वतंत्रता के साथ दूसरों के अधिकारों का

सम्मान भी करना है। वह सिखाता है कि प्रतिभा के साथ अनुशासन और अधिकार के साथ जिम्मेदारी भी आवश्यक है। आज युवा के पास Career Guidance देने वाले बहुत लोग हैं, लेकिन Character Guidance देने वाले कितने हैं? यही गुरु की सबसे बड़ी आवश्यकता है। डिग्री किसी व्यक्ति को योग्य बना सकती है, लेकिन संस्कार उसे श्रेष्ठ बनाते हैं। ज्ञान व्यक्ति को सक्षम बनाता है, लेकिन विवेक उसे जिम्मेदार बनाता है। और गुरु इन दोनों के बीच सेतु का काम करता है।

**सोशल मीडिया के दौर में गुरु की भूमिका :** आज युवा अपने मोबाइल की स्क्रीन पर अनेक “influencers” को देखता है। उनके पहनावे, जीवनशैली, विचार और सफलता को देखकर प्रभावित होता है। समस्या influencers होने में नहीं है; समस्या तब शुरू होती है जब प्रभाव और अनुकरण के बीच का अंतर समाप्त हो जाता है। हर लोकप्रिय व्यक्ति आदर्श नहीं होता। गुरु युवा को यही विवेक देता है कि किसे सुनना है, किससे सीखना है और किस बात को केवल सूचना मानकर आगे बढ़ जाना है।

क्योंकि इंटरनेट का एल्गोरिद्म यह देखता है कि हमें क्या पसंद आएगा, जबकि गुरु यह सोचता है कि हमारे लिए क्या सही होगा।

गुरु का अर्थ केवल आदेश देने वाला व्यक्ति भी नहीं है। भारतीय गुरु परंपरा में संवाद का विशेष महत्व रहा है। गुरु शिष्य को सोचने, प्रश्न करने और सत्य की खोज करने के लिए प्रेरित करता है। आज की युवा पीढ़ी को ऐसे ही गुरुओं की आवश्यकता हैकृजो उसकी जिज्ञासा को दबाएं नहीं, बल्कि उसे सही दिशा दें; जो असहमति से नाराज न हों, बल्कि तर्क करना सिखाएं; जो केवल उत्तर न दें, बल्कि सही प्रश्न पूछना भी सिखाएं। क्योंकि आने वाले समय में मशीनें और कृत्रिम बुद्धिमत्ता बहुत-सी जानकारियां उपलब्ध करा देंगी, लेकिन मानवीय विवेक, संवेदना और नैतिक निर्णय की आवश्यकता समाप्त नहीं होगी।

गुरु पूर्णिमा पर हमें केवल अपने पुराने गुरुओं को याद करके उनके चरणों में श्रद्धा अर्पित नहीं करनी चाहिए, बल्कि उनके दिए मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प भी लेना चाहिए। और आज के माता-पिता तथा शिक्षकों के लिए भी यह आत्ममंथन का अवसर है। हमें अपनी युवा पीढ़ी को केवल यह नहीं सिखाना कि “अच्छी नौकरी कैसे पाएं”, बल्कि यह भी सिखाना होगा कि “अच्छे नागरिक बने”। उन्हें तकनीक से दूर करने की आवश्यकता नहीं है; बल्कि तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग सिखाने की आवश्यकता है। मोबाइल उनके हाथ में रहे, लेकिन मोबाइल उनके मन का मालिक न बने। इंटरनेट उनके ज्ञान का माध्यम बने, लेकिन उनके निर्णयों का नियंता न बने। क्योंकि आने वाला भारत केवल तकनीकी रूप से दक्ष युवाओं से नहीं बनेगा। उसे ऐसे युवाओं की आवश्यकता होगी जिनके हाथ में तकनीक हो, लेकिन हृदय में संवेदना, विचारों में विवेक, व्यवहार में संस्कार और जीवन में अनुशासन हो। यही गुरु की वास्तविक देन है।

# नागरिकता के राष्ट्रीय रजिस्टर की जरूरत

**नवीय मूल्यों को साकार रूप देने वाला एक प्रेरणादायी संस्थान है दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार, जिसने सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर अनेक समाजोपयोगी प्रकल्पों का संचालन किया है। मिशन द्वारा संचालित प्रमुख सेवा कार्यों में समिधा सेवा चिकित्सालय, अनवरत अन्न सेवा (माँ गंगा भोजनालय), हरित भारत अभियान, दिव्य भारत शिक्षा मंदिर, प्रदीप वाटिका छात्रावास, डिवाइन कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज तथा गौशाला केंद्र उल्लेखनीय हैं। वर्ष 1987 में समाज द्वारा उपेक्षित कुष्ठ रोगियों की सेवा के एक छोटे से संकल्प से प्रारम्भ हुआ यह अभियान आज एक व्यापक सेवा आंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। वर्ष 2020 से प्रारम्भ हुई अन्न सेवा आज भी निरंतर कुष्ठ रोगियों, भिक्षुकों एवं बच्चों तक भोजन पहुँचाने का कार्य कर रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण तथा संस्कार निर्माण के क्षेत्र में मिशन के विविध प्रयास समाज के समग्र विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।**

---

सेवा परमोधर्मः' केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के उस जीवन-दर्शन का सार है, जो मानवता, करुणा और निस्वार्थ सेवा को सर्वोच्च धर्म के रूप में स्थापित करता है। कुछ व्यक्तियों के लिए यह विचार केवल प्रेरणा नहीं, बल्कि जीवन का संकल्प बन जाता है। वे अपने सम्पूर्ण जीवन को इस भावना के साथ समर्पित कर देते हैं कि निस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। इसी सेवा-दर्शन, मिशन की कार्यप्रणाली तथा विभिन्न सेवा प्रकल्पों को निकटता से समझने के उद्देश्य से दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार के प्रतिनिधि के साथ यह विशेष साक्षात्कार किया गया। यह साक्षात्कार सुश्री पूनम भटनागर द्वारा लिया गया है, जिसमें मिशन की स्थापना, सेवा-दृष्टि, विभिन्न प्रकल्पों तथा समाज के प्रति उसके योगदान पर विस्तार से चर्चा की गई है। प्रस्तुत है साक्षात्कार के मुख्य अंश-

**दिव्य प्रेम सेवा मिशन की स्थापना की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली? क्या कोई ऐसा व्यक्तिगत अनुभव है जिसने आपके जीवन की दिशा बदल दी?**

एक बार हरिद्वार प्रवास के दौरान चंडी घाट पर उन्होंने समाज द्वारा उपेक्षित कुष्ठ रोगियों की अत्यंत दयनीय स्थिति को निकट से देखा। वही दृश्य उनके जीवन का निर्णायक क्षण बन गया। उन्होंने उनके बीच रहकर सेवा कार्य प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में महाविद्यालय के कुछ मित्र इस अभियान से जुड़े और धीरे-धीरे समाज के अनेक लोगों का सहयोग मिलता गया। लगभग तीन दशकों की सतत सेवा, समर्पण और जनसहयोग के परिणामस्वरूप यह प्रयास आज दिव्य प्रेम सेवा मिशन के रूप में स्थापित हो चुका है।

**मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवा परियोजनाओं के लिए वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था किस प्रकार की जाती है? क्या मिशन सरकारी सहायता भी प्राप्त करता है?**

मिशन का आधार समाज का सहयोग है। वर्ष भर विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनके माध्यम से सेवा कार्यों के लिए संसाधन जुटाए जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, 22 से 28 अक्टूबर तक गाजियाबाद में छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन पर आधारित विश्व के सबसे बड़े ऐतिहासिक नाटक का आयोजन किया जा रहा है। इसी प्रकार देशभक्ति एवं महापुरुषों के जीवन पर आधारित नाटकों तथा सम्मान समारोहों के माध्यम से समाज को सेवा अभियान से जोड़ा जाता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मिशन सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर नहीं है, बल्कि समाज के स्वैच्छिक सहयोग एवं दान के माध्यम से संचालित होता है।

**सरकारी नीतियों के साथ मिशन का समन्वय किस प्रकार स्थापित किया जाता है?**

मिशन द्वारा संचालित विद्यालय एवं छात्रावास पूरी तरह सरकारी नियमों एवं नीतियों के अनुरूप कार्य करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संचालन के लिए शासकीय मानकों का पालन अनिवार्य है। उन्होंने उल्लेख किया कि मिशन वर्तमान में छह प्रमुख केन्द्रों के माध्यम से अपने विविध सेवा प्रकल्पों का संचालन कर रहा है।

**इतने व्यापक स्तर पर मिशन का संचालन किस प्रकार संभव हो पाता है?**

किसी भी संस्था की सफलता सामूहिक नेतृत्व पर आधारित होती है। मिशन में सभी निर्णय विचार-विमर्श के बाद लिए जाते हैं तथा प्रत्येक कार्य के लिए अलग-अलग उत्तरदायित्व निर्धारित हैं। यही टीम भावना संस्था के संतुलित एवं प्रभावी संचालन का आधार है।

**आने वाले पाँच से दस वर्षों में आप मिशन को किस रूप में**

**डॉ आशीष गौतम, राजनीति विज्ञान (Political Science) विषय में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की उपाधि प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त, उन्हें विभिन्न शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए अनेक मानद एवं विशिष्ट उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है।**

**दिव्य प्रेम सेवा मिशन की स्थापना वर्ष 1997 में उनके द्वारा की गई थी। सेवा, करुणा और मानवता के मूल्यों पर आधारित इस मिशन का उद्देश्य समाज के वंचित एवं उपेक्षित वर्गों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। वर्षों के सतत प्रयासों और समर्पित सेवा के परिणामस्वरूप यह मिशन आज शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्न सेवा, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक उत्थान के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। इस पृष्ठभूमि के साथ साक्षात्कार का क्रम मिशन की स्थापना, उसके उद्देश्यों तथा विभिन्न सेवा-प्रकल्पों पर केंद्रित रहा।**

**देखना चाहते हैं?**

मिशन ने चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण पहल करते हुए मेडिकल कॉलेज की स्थापना की है। उनका उद्देश्य विशेष रूप से कुष्ठ रोगियों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध कराना है। भविष्य में वे चाहते हैं कि मिशन सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में और अधिक प्रभावी भूमिका निभाए तथा समाज के अधिकाधिक लोगों तक अपनी पहुँच बनाए।

**क्या मिशन आपदा के समय भी राहत एवं पुनर्वास कार्यों में सक्रिय रहता है?**

वर्ष 2001 में गुजरात आपदा के दौरान राहत सामग्री भेजी गई थी। उत्तराखण्ड सहित अन्य क्षेत्रों में आवश्यकता पड़ने पर भी मिशन सहयोग करता रहा है। कोविड-19 महामारी के दौरान, जब अनेक लोगों की आजीविका प्रभावित हो गई थी, तब हरिद्वार के चंडी घाट क्षेत्र में निरंतर भोजन व्यवस्था संचालित की गई।

**आप इस मिशन के माध्यम से समाज में किस प्रकार का परिवर्तन देखना चाहते हैं?**

समाज में सेवा-भाव का विस्तार ही वास्तविक परिवर्तन का आधार है। वे चाहते हैं कि अधिक से अधिक लोग सेवा को अपने जीवन-मूल्यों का हिस्सा बनाएं और समाज के वंचित वर्गों के उत्थान में सक्रिय सहभागिता निभाएँ।

'यदि समाज को आगे बढ़ाना है, तो लोगों की टांग खींचने के बजाय उनका हाथ थामना होगा।'

# Gen-Z की शिकायतें जायज, वे एंटी-नेशनल नहीं

## छात्रों के प्रदर्शन पर बोले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत

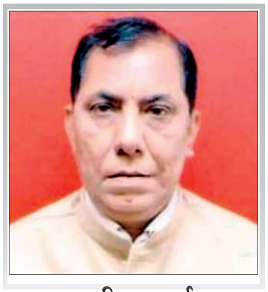

**सतीश शर्मा**
**केशव भाग संघचालक**
**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, नोएडा**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने "युवाओं से संवाद कार्यक्रम" में छात्रों के प्रदर्शन को लेकर अपनी बात रखी। भागवत ने कहा कि लोकतंत्र में आंदोलन भी संवाद का एक तरीका है। अगर बातचीत होगी तो समाधान निकलेगा और जब बात नहीं सुनी जाती तो लोग आंदोलन का रास्ता अपना सकते हैं। छात्रों के विरोध-प्रदर्शन और उन्हें 'राष्ट्र-विरोधी' बताए जाने के सवाल पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि Gen Z और Gen Alpha को गलत नजरिए से नहीं देखना चाहिए। उनके मुताबिक नई पीढ़ी देशभक्ति और सेवा के मूल्यों को समझती है और मौजूदा पीढ़ी से ज्यादा ईमानदार है। भागवत ने कहा, 'अगर Gen Z विरोध कर रही है, तो वे राष्ट्र-विरोधी नहीं हैं, वे हमारे ही लोग हैं, हमारी अगली पीढ़ी हैं, मुझे नहीं लगता कि Gen Z ऐसी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने 6 अगस्त 2026 को मुंबई के बांद्रा स्थित नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित (इंडिया इंटरनेशनल मूवमेंट टू यूनाइट नेशंस) के 15वें वार्षिक शिखर सम्मेलन में (जेन-जी) और जेन अल्फा के युवाओं के साथ एक महत्वपूर्ण संवाद में कहा।

भागवत जी ने कहा कि नई पीढ़ी सवाल पूछती है। हमें उन्हें तर्क और प्यार से समझाना होगा। Gen-Z और Gen-Alpha के पास जानकारी + टेक्नोलॉजी है, अब जरूरत है चरित्र और कर्तव्य की। भागवत ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि 'आज्ञाकारिता का दौर अब खत्म हो चुका है' आंख मूंदकर बात मानने का समय गया। आज की युवा पीढ़ी (Gen Z) को केवल आदेश देकर काम नहीं कराया जा सकता, वे हर बात के पीछे 'क्यों' का कारण और ठोस लॉजिक मांगते हैं उन्हे संतुष्ट करना जरूरी, युवाओं से अपनी बात मनवाने के लिए उन्हें तर्कों से संतुष्ट करना अनिवार्य है। उन्होंने युवाओं से जुड़ने के लिए सीधी बातचीत और सवाल-जवाब की संस्कृति को अपनाने पर जोर दिया। संवाद के दौरान उन्होंने कहा कि LGBTQ+ समुदाय भी हमारे समाज का एक अभिन्न हिस्सा है। उन्हें सम्मान और समानता का अधिकार मिलना चाहिए और समाज को उन्हें हीन भावना से नहीं देखना चाहिए। उन्होंने टिप्पणी की कि जेन जी शांत दिमाग से सोचने के बजाय अक्सर जो उन्हें तात्कालिक रूप से सही और तार्किक लगता है, उससे जल्दी प्रभावित हो जाती है।

इस संवाद में 'विश्व को एकजुट करने में भारत की क्या भूमिका हो सकती है', इस विषय पर भी चर्चा की गई। युवाओं के मन में देश के प्रति प्रेम जगाना और मजबूत राष्ट्र के निर्माण में उनके योगदान को रेखांकित करना इस बातचीत का एक मुख्य एजेंडा रहा। इस विशेष सम्मेलन में देश के लगभग 100 शहरों से आए 2,000 से अधिक छात्रों (विशेषकर 15 से 19 वर्ष के आयु वर्ग) ने भाग लिया। राजनीति और सामाजिक हलकों में इस संवाद को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अपनी रणनीति में बदलाव करने और देश के भविष्य (Gen Z) को नजरअंदाज न करने के एक बड़े कदम के रूप में देखा जा रहा है।

मोहन भागवत जी ने नई पीढ़ी (Gen Z) के युवाओं को अत्यंत प्रामाणिक (Authentic) और भावुक बताया। उन्होंने युवाओं को देश के भविष्य के रूप में नेतृत्व संभालने, राष्ट्र निर्माण और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत का पारंपरिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण पूरे विश्व को जोड़ने और एकता के सूत्र में पिरोने की क्षमता रखता है। उन्होंने युवाओं को केवल तकनीक तक सीमित न रहकर वास्तविक नेतृत्व और सामाजिक मूल्यों को समझने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि आज परिवारों में विश्वास और संवाद का वातावरण कम हो गया है। अगर घर में बातचीत शुरू हो जाए तो कई सामाजिक और मानसिक चुनौतियों का समाधान निकल सकता है।

'जब परिवार मजबूत होंगे, तभी समाज संगठित और राष्ट्र सशक्त बनेगा'। युवाओं से अपील की कि व्यस्त जीवन में परिवार के लिए समय निकालें और अगली पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक बनने के संस्कार दें। उन्होंने कहा कि भारत अपने स्वभाव और संस्कृति से हिंदू राष्ट्र है। दुनिया में हमारी पहचान सनातन संस्कृति से होती है। साथ ही ये भी दोहराया कि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति चाहे किसी भी धर्म का हो, भारतीय है। हिंदू दर्शन सह-अस्तित्व में विश्वास रखता है इसलिए इस्लाम भारत में है और रहेगा। डेमोग्राफी में बदलाव को चिंता का विषय बताया। कहा कि घुसपैठ और कट्टरपंथी विचारधारा से समाज पर असर पड़ता है, इसलिए इसे संवेदनशीलता से समझना होगा। भागवत जी ने विवेकानंद का उदाहरण दिया – 'My American Brothers and Sisters' कहने के पीछे तपस्या की शक्ति थी। बोले कि भारत को आर्थिक, नैतिक और सामरिक सामर्थ्य बनाना है, पर 'डंडा चलाकर' नहीं, सबको मित्र बनाकर विश्व कल्याण के लिए।

उन्होंने संस्कृत श्लोक भी कहा–

**एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।**
**स्वं स्वं चरित्रां शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।**

अर्थात् इस देश में जन्मे श्रेष्ठ लोगों से पूरी दुनिया चरित्र सीखे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में कहा कि संघ राष्ट्रहित में सलाह देता है, फैसला चुनी हुई सरकार का काम है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज के सभी वर्गों के साथ संवाद की निरंतर प्रक्रिया में विश्वास रखता है।

IIMUN युवाओं को UN की डिप्लोमेसी सिखाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक भागवत जी ने युवाओं से कहा कि ग्लोबल बनो, पर जड़ें मत भूलो। टेक्नोलॉजी को देश सेवा और समाज में लगाओ।

मोहन भागवत जी ने महिलाओं की भूमिका पर स्पष्ट किया कि समाज में महिलाओं और पुरुषों के अधिकार व कार्य समान और एक-दूसरे के पूरक हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में महिलाओं के न होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि यह धारणा गलत है, क्योंकि राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ ही हुई थी और अखिल भारतीय स्तर पर महिलाओं की पूर्ण सहभागिता व नेतृत्व रहता है। समाज में महिलाओं और पुरुषों का स्थान बराबर और एक-दूसरे का पूरक है।संघ के गठन के समय से ही राष्ट्र सेविका समिति सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।संघ से जुड़े विभिन्न संगठनों में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समान क्षमता के साथ जिम्मेदारियां संभाल रही हैं। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा जैसे महत्वपूर्ण मंचों पर भी महिलाओं की सक्रिय सहभागिता रहती है।

मोहन भागवत का मुंबई के बांद्रा स्थित जियो कन्वेंशन सेंटर में जेन जी और जेन अल्फा के छात्रों के साथ हुआ सीधा संवाद देशव्यापी चर्चा का विषय रहा है। दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए हालिया छात्र आंदोलन के बाद संघ प्रमुख ने युवा पीढ़ी के विचारों को सीधे सुनने और समझने के लिए इस विशेष कार्यक्रम की पहल की। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी की भावनाओं, उनकी सोच और उनकी चिंताओं को करीब से सुनना और समझना था। यह कार्यक्रम IIMUN द्वारा अपनी 15वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। संघ का यह प्रयास हालिया समय में बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिवेश के बीच देश की सबसे युवा पीढ़ी से सीधे जुड़ने और उनके विचारों को सुनने की एक बड़ी पहल के रूप में देखा जा रहा है।

# वंदे मातरम् के राष्ट्रभाव से विमुख कांग्रेस

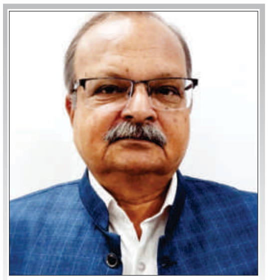

**सर्वेश कुमार सिंह**
**स्वतंत्र पत्रकार, लखनऊ**

कांग्रेस ने एक बार फिर यह साबित किया है कि वह राष्ट्रीय भावों और भारत के मन को नहीं समझ पा रही है, या जानबूझकर नासमझी का परिचय दे रही है। ऐसा कांग्रेस द्वारा मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के तहत किया जा रहा है। लेकिन कांग्रेस यह भूल रही है कि वह ऐसा करके राष्ट्र की मुख्यधारा से बाहर होती चली जा रही है। अनेक राज्यों में राजनीति के हाशिये पर पहुंच चुकी कांग्रेस अपनी इसी मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का परिणाम भुगत रही है।

कांग्रेस ने राष्ट्रभाव की उपेक्षा का एक और परिचय दिया है। गत दिवस नई दिल्ली में आयोजित कांग्रेस की राष्ट्रीय कार्यसमिति में वंदे मातरम् को लेकर जो प्रस्ताव पारित हुआ, वह उसकी राजनीतिक अपरिपक्वता और आत्मघाती कदम का परिचायक है। कांग्रेस ने इस प्रस्ताव में कहा है कि पार्टी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर वंदेमातरम् का केवल वही अंश गाया जाएगा, जोकि कांग्रेस कार्यसमिति ने कोलकाता (कलकत्ता) अधिवेशन में 28 अक्टूबर 1937 को स्वीकृत किया था। यानि कि वंदे मातरम् के छह अंतरों में से केवल दो ही गाये जाएंगे। इस बैठक की अध्यक्षता कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने की। इसमें सोनिया गांधी, राहुल गांधी समेत कांग्रेस के 88 नेता उपस्थित थे।

इसके पहले कांग्रेस अध्यक्ष खडगे और सोनियां गांधी ने 15 अगस्त को पार्टी कार्यालय में ध्वजारोहण और वंदे मातरम् के गायन के दौरान उस समय असहजता प्रकट की थी, जब पूरा वंदे मातरम् बजाया गया। यहां तक कि सोनिया गांधी ने इसे रोकने के लिए भी कहा। राष्ट्रीय भावों के विरोध का कांग्रेस का पुराना इतिहास रहा है। यह पहला अवसर नहीं है जब कांग्रेस ने वंदे मातरम् के साथ अन्याय किया है। कांग्रेस का इतिहास ही वंदे मातरम् के विरोध का रहा है।

कांग्रेस यूं तो एक पार्टी के नाते अपने फैसले लेने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन राष्ट्रीय महत्व के विषयों और कानूनी प्रावधानों के अन्तर्गत उसे वे नियम मानने की भी बाध्यता है जोकि संसद द्वारा बनाये गए हैं और जिन्हें राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत करके अधिसूचित किया गया है। वंदे मातरम् के अनिवार्य गायन, पूरे छह अंतरों को गाने या बजाये जाने के लिए सरकार ने "राष्ट्रीय सम्मान, अपमान निवारण (संशोधन) अधिनियम 2026" पारित कराकर कानूनन वंदे मातरम् के विरोध को अपराध घोषित किया है। इसके अंतर्गत वंदेमातरम् का जानबूझ कर अपमान करना दंडनीय अपराध होगा। इसमें पूर्ण वंदेमातरम् का गायन भी शामिल है। यह अध्यादेश 29 जुलाई 2026 को राज्य सभा में और 30 जुलाई 2026 को लोक सभा में पारित हुआ है। इसे राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने 12 अगस्त 2026 को स्वीकृति प्रदान कर दी है। इसके बाद यह कानून बन गया है। इसके पहले केन्द्रीय गृह मंत्रालय 28 जनवरी 2026 को एक विस्तृत आदेश जारी कर वंदेमातरम् का प्रोटोकाल जारी कर चुका है। इसके अनुसार सभी सार्वजनिक स्थानों पर जहां तिरंगा फहराया जाएगा अथवा राष्ट्रपति या राज्यपाल, उपराज्यपाल का कार्यक्रम होगा,उसमें राष्ट्रगीत से पहले पूर्ण वंदे मातरम् गाया जाएगा।

संसद द्वारा यह कानून बन जाने के बाद और गृह मंत्रालय के प्रोटोकाल जारी होने पर भी अगर कांग्रेस ने इसे नहीं मानने का दुस्साहस किया है तो यह आपराधिक और गंभीर मामला है। राष्ट्रीय प्रतीक के अपमान और राष्ट्रभाव की उपेक्षा, कानून की अवमानना की श्रेणी में आता है। ऐसा करके कांग्रेस ने गंभीर संवैधानिक संकट खड़ा किया है। क्योंकि कोई भी पार्टी संसद से ऊपर नहीं हो सकती। उसे संसद द्वारा बनाये गए नियमों और कानूनों को मानने की बाध्यता है। लेकिन, कांग्रेस ने ऐसा किया है।

वंदे मातरम् पर कांग्रेस ने जो फैसला किया है वह कोई आश्चर्य पैदा नहीं करता, क्योंकि कांग्रेस ने वंदे मातरम् के साथ अन्यायपूर्ण

> कांग्रेस ने राष्ट्रभाव की उपेक्षा का एक और परिचय दिया है। गत दिवस नई दिल्ली में आयोजित कांग्रेस की राष्ट्रीय कार्यसमिति में वंदे मातरम् को लेकर जो प्रस्ताव पारित हुआ, वह उसकी राजनीतिक अपरिपक्वता और आत्मघाती कदम का परिचायक है। कांग्रेस ने इस प्रस्ताव में कहा है कि पार्टी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर वंदे मातरम् का केवल वही अंश गाया जाएगा, जोकि कांग्रेस कार्यसमिति ने कोलकाता (कलकत्ता) अधिवेशन में 28 अक्टूबर 1937 को स्वीकृत किया था। यानि कि वंदेमातरम् के छह अंतरों में से केवल दो ही गाये जाएंगे।

व्यवहार पहली बार नहीं किया है। यह कांग्रेस ही थी जिसने 1937 में वंदे मातरम् को खंडित करके राष्ट्रभाव को गहरी चोट पहुंचायी थी। कांग्रेस के एक अलगाववादी मुस्लिम नेता जो इस पार्टी के अध्यक्ष भी रहे उनके विरोध और मांग के चलते वंदे मातरम् के छह में से चार अंतरे हटा दिये गए थे। एक तरह से वंदे मातरम् की आत्मा पर ही कुठाराघात कर दिया गया था।

वंदे मातरम् और कांग्रेस के विरोध का लम्बा इतिहास है। इसके विरोध की शुरुआत 28 दिसम्बर 1923 से एक जनवरी 1924 तक काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश) में हुए राष्ट्रीय अधिवेशन में हुई। यहां पहली बार पार्टी के अध्यक्ष और अधिवेशन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने वंदे मातरम् का विरोध किया था। इस अधिवेशन में पूर्व के अधिवेशनों की भांति ही वंदे मातरम् का गायन होना था। गायन के लिए प्रसिद्ध गायक, संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिंगम्बर पुलस्कर को बुलाया गया था। पंडित जी ने जब गायन शुरु किया तो अध्यक्षता कर रहे मौलाना जौहर ने इसे रोकने का आदेश दिया। लेकिन, पुलस्कर जी वंदे मातरम् का गायन करते रहे। इस पर मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने सत्र की अध्यक्षता छोड़ दी और मंच से नीचे उतर कर बाहर चले गए। वे मंच पर तभी लौटे जब वंदे मातरम् पूर्ण हो गया। इस विरोध का कांग्रेस पर गहरा असर हुआ। कांग्रेस ने एक समिति बना दी। इसी समिति की रिपोर्ट को आधार बनाकर 28 अक्टूबर 1937 को कलकत्ता अधिवेशन में वंदे मातरम् को खंडित करने का फैसला कर दिया गया। कल 19 अगस्त 2026 को कांग्रेस ने उसी प्रस्ताव को फिर से स्वीकार करने का फैसला किया है जोकि कलकत्ता अधिवेशन में पारित हुआ था।

वर्तमान में वंदे मातरम को लेकर देश में एक उत्साहपूर्ण वातावरण है। गत 7 नवम्बर 2025 को वंदे मातरम् की रचना को 150 वर्ष पूर्ण हुए तो देश भर में देशभक्ति का ज्वार उठ गया। वंदे मातरम् एक बार फिर अभियान बन गया। इसे अभियान के रूप में जनमानस में फिर से स्थापित करने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को है। उन्होंने ही 31 अक्टूबर 2025 को केवडिया (गुजरात) में सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती में वंदे मातरम् को याद किया और बताया कि इसके 150 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इसे उत्साह पूर्वक मानाया जाएगा। इसे उन्होंने एक अभियान बना दिया और मिशन मोड में कार्य किया। पहले देश भर में शिक्षण संस्थाओं, पार्टी स्तर पर, संसद, विधानसभाओं में वंदे माततरम् के 150 वर्ष पर कार्यक्रम आयोजित किये। फिर इसे अखंड स्वरूप में स्वीकार करने के लिए सरकार के स्तर पर प्रयास शुरु किये गए। ये प्रयास वर्ष 2026 में सफलता पूर्वक फलीभूत हो गए।

इसी क्रम को आगे बढाते हुए 15 अगस्त 2026 को इस बार के स्वतंत्रता दिवस समारोह में लाल किले से वंदेमातरम् का पहली बार गायन हुआ। पूर्ण और अखंड वंदे मातरम् का गायन पहली बार राष्ट्रीय स्वीकृति प्रदान करने का प्रतीक बन गया। हालांकि इस बार के स्वतंत्रता दिवस समारोह से कांग्रेस के अध्यक्ष और प्रमुख नेताओं सोनिया गांधी, राहुल गांधी ने दूरी बनाये रखी। शायद वे इसीलिए कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हुए क्योंकि यहां वंदे मातरम् के सभी छह अंतरों का गायन होना था और कांग्रेस को यह स्वीकार नहीं है।

वंदे मातरम् का विरोध कांग्रेस को बहुत भारी पड़ेगा। यह राष्ट्रीय मन की अस्मिता का प्रतीक है। इसे यह राष्ट्रीय पार्टी नहीं समझ पा रही है। ये पार्टी और विपक्ष आज तक यह नहीं समझ सका कि पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की पराजय और भाजपा के सत्तारूढ़ होने में वंदे मातरम् एक अहम फैक्टर रहा है। लेकिन, कांग्रेस के नेताओं और रणनीतिकारों ने शायद यह तय किया है कि वे इस प्राचीन पार्टी को नेस्तनाबूद करके ही रहेंगे। ईश्वर कांग्रेस के नेताओं को सद्बुद्धि दे, कि वे राष्ट्रीय आंदोलन से उपजी पार्टी को स्थापना काल के भाव से पुनः जोड़ सकें।

# विकसित और आत्मनिर्भर भारत की दिशा तय करता भारत की 'सौर ऊर्जा नीति'

**डॉ. शेखर सुमन**
नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में युद्ध शुरू होने के बाद पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा चर्चा ऊर्जा संकट को लेकर शुरू हुई। भारत भी इससे अधूरा नहीं रहा। क्योंकि ऊर्जा आपूर्ति के मामले में हम पश्चिम एशिया पर आश्रित हैं, विशेषकर तेल और गैस आपूर्ति को लेकर जो कि भारत में ऊर्जा का सबसे बड़ा स्त्रोत है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में भारत ने न केवल इस चुनौती का डटकर सामना किया बल्कि कई नयी रणनीति विकसित की जिससे कि भारत ऊर्जा के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो और भविष्य में इस तरह की किसी भी चुनौती का सामना कर सके।

इस दिशा में सबसे ज्यादा काम सौर ऊर्जा के क्षेत्र में किया गया। भारत ने 2026 की पहली छमाही में 34 GWdc (Gigawatts Direct Current) सौर ऊर्जा क्षमता जोड़ी, जो 2025 की पहली छमाही (H1) के स्तर से 38 प्रतिशत अधिक है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि डेवलपर्स मॉडल और निर्माताओं की स्वीकृत सूची-II (ALMM-II) की जून की समय सीमा से पहले अपनी परियोजनाओं को चालू करने की होड़ में थे। वुड मैकेन्जी (Wood Mackenzie) की 'फ्रॉम मॉड्यूल टू सेल्स-इंडिया डीपेंस इट्स सोलर पीवी पुश' रिपोर्ट के अनुसार, पूरे वर्ष में यह क्षमता 50 GWdc से अधिक होने का अनुमान है, जो 2025 में दर्ज 49 GWdc के पिछले रिकॉर्ड को पीछे छोड़ देगा।

वुड मैकेन्जी के रिसर्च एनालिस्ट सुरीत सिंह बताते हैं कि भारत का ALMM-II एक पूरी तरह से एकीकृत घरेलू सौर आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाई चेन) के निर्माण की दिशा में एक साहसिक कदम है।

ALMM lwph-II (ALMM List-II) भारत का एक नियामक जनादेश (Regulatory Mandate) है, जिसके तहत सरकार द्वारा समर्थित, सब्सिडी वाली, नेट-मीटरिंग और ओपन-एक्सेस परियोजनाओं में उपयोग किए जाने वाले सौर मॉड्यूल में घरेलू स्तर पर निर्मित सोलर सेल्स का उपयोग करना अनिवार्य है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा लागू किया गया यह नियम स्थानीय विनिर्माण से जुड़े नियमों का दायरा केवल तैयार पैनल्स (सूची-I) से बढ़ाकर अब उनके प्राथमिक घटक-सोलर पीवी सेल्स तक विस्तारित करता है।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 31 जुलाई, 2026 तक भारत की कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता 164-59 GW तक पहुँच गई। मंत्रालय यह सुनिश्चित करने में भी लगी है 'सौर ऊर्जा' की बढ़ती शक्ति का लाभ भारत के आम नागरिक तक पहुंचे और 'हर घर आत्मनिर्भर' बनें।

अगर आर्थिक समृद्धि को एक पहिया मानें तो ऊर्जा उसकी धुरी है। भारत इस धुरी के महत्व को जानता है, इसलिए ऊर्जा आपूर्ति के क्षेत्र में हर घर को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना' शुरू की गयी। इस बेहद महत्वाकांक्षी योजना के माध्यम से भारत के करीब एक करोड़ घरों को सौर ऊर्जा उपलब्ध कराने के लिए 75,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि आवंटित की गयी है। हर घर को हर महीने 300 यूनिट मुफ्त बिजली दी जाएगी।

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में शुरुआत से हीं सूर्य और उसकी ऊर्जा का विशेष महत्व रहा है। विकसित भारत के सपने को पूरा करने में सौर ऊर्जा न केवल मुख्य भूमिका निभाएगा बल्कि भारत को एक सतत आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करेगा।

# प्राचीन मंदिर : भारत की अमर सांस्कृतिक विरासत

उमानाथ त्रिपाठी
स्वतंत्र लेखक, समीक्षक एवं रचनाकार

भारत को यदि मंदिरों की भूमि कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिमालय की हिमाच्छादित पर्वत-श्रृंखलाओं से लेकर दक्षिण के सागर तटों तक, पश्चिम के मरुस्थलों से लेकर पूर्व के हरित अंचलों तक असंख्य मंदिर भारतीय संस्कृति की गौरवगाथा का अमिट इतिहास संजोए हुए हैं। ये मंदिर केवल पूजा-अर्चना के स्थल नहीं हैं, बल्कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान, स्थापत्य-कला, मूर्तिकला, खगोल संबंधी ज्ञान, दर्शन तथा आध्यात्मिक चिंतन के महत्वपूर्ण केंद्र भी रहे हैं। इनकी प्रत्येक शिला, प्रत्येक स्तंभ और प्रत्येक प्रतिमा हमारे पूर्वजों की अद्भुत सृजनशीलता, तकनीकी दक्षता और सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रमाण प्रस्तुत करती है। इन मंदिरों में श्रद्धा के साथ-साथ भारत की शाश्वत सांस्कृतिक परंपरा और कलात्मक वैभव का अद्भुत समन्वय भी दृष्टिगोचर होता है।

प्रस्तुत हैं भारत के कुछ ऐसे प्राचीन एवं ऐतिहासिक मंदिर और मंदिर-समूह, जो अपनी ऐतिहासिकता, कलात्मक उत्कृष्टता और धार्मिक महत्ता के कारण भारतीय विरासत के अनमोल रत्न माने जाते हैं।

**1. बदामी गुफा मंदिर : कर्नाटक** – कर्नाटक के बागलकोट जनपद में स्थित बदामी गुफा मंदिर भारतीय शैलकृत स्थापत्य-कला की अनुपम धरोहर हैं। इन गुफाओं का निर्माण मुख्यतः छठी और सातवीं शताब्दी में प्रारंभिक चालुक्य शासकों के काल में हुआ। लाल बलुआ पत्थर की विशाल चट्टानों को काटकर निर्मित ये चार गुफाएँ दक्कन की प्राचीन स्थापत्य परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इन गुफाओं में भगवान शिव, भगवान विष्णु तथा जैन तीर्थंकरों की भव्य प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। विशेष रूप से भगवान शिव के अठारह भुजाओं वाले नटराज स्वरूप की प्रतिमा अत्यंत आकर्षक है, जिसमें नृत्य की विभिन्न मुद्राओं का अद्भुत और सजीव अंकन किया गया है। सबसे बड़ी तीसरी गुफा में भगवान विष्णु के त्रिविक्रम सहित अनेक वैष्णव स्वरूपों की विशाल शिलाकृतियाँ विशेष दर्शनीय हैं। वहीं चौथी गुफा जैन धर्म से संबंधित है, जिसमें तीर्थंकरों की अनेक सुंदर प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

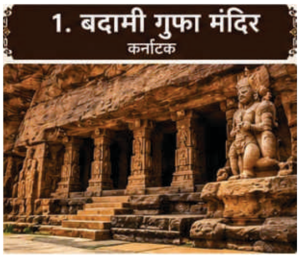


गुफाओं के स्तंभों, भित्तियों और शिलाखंडों पर की गई सूक्ष्म एवं कलात्मक नक्काशी तत्कालीन शिल्पकारों की अद्भुत प्रतिभा को दर्शाती है। एक ही परिसर में शैव, वैष्णव और जैन कला-परंपराओं का मिलना भारतीय सांस्कृतिक समन्वय की सुंदर झलक प्रस्तुत करता है। बदामी की ये गुफाएँ केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं, बल्कि प्राचीन भारत की शिल्प-कला, स्थापत्य-कौशल और सांस्कृतिक वैभव की जीवंत गवाही हैं।

**2. यागंती उमा महेश्वर मंदिर – आंध्र प्रदेश** : आंध्र प्रदेश के नंद्याल जनपद में स्थित यागंती उमा महेश्वर मंदिर भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध शिव तीर्थ है। प्राकृतिक पर्वतों और गुफाओं से घिरा यह मंदिर अपनी आध्यात्मिक शांति, प्राकृतिक सौंदर्य और विशिष्ट धार्मिक परंपराओं के कारण श्रद्धालुओं को विशेष रूप से आकर्षित करता है।

मंदिर परिसर में स्थापित विशाल नंदी प्रतिमा इसकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है। स्थानीय लोकमान्यता है कि नंदी की प्रतिमा का आकार समय के साथ धीरे-धीरे बढ़ रहा है। इसके अतिरिक्त परिसर में स्थित पवित्र पुष्करिणी, प्राचीन गुफाएँ और प्राकृतिक शैल संरचनाएँ इस स्थान को धार्मिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से विशिष्ट बनाती हैं।

यागंती से महर्षि अगस्त्य से जुड़ी अनेक पौराणिक कथाएँ भी प्रचलित हैं। मंदिर का वर्तमान स्वरूप मुख्यतः विजयनगर काल से संबंधित माना जाता है। यहाँ की स्थापत्य परंपरा और प्राकृतिक परिवेश इस तीर्थ को विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। यागंती उमा महेश्वर मंदिर में धर्म, पुरातन स्थापत्य और प्रकृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। पर्वतों की शांत पृष्ठभूमि, प्राचीन गुफाएँ, पवित्र जलकुंड और विशाल नंदी प्रतिमा इसे दक्षिण भारत के विशिष्ट शिव तीर्थों में स्थान प्रदान करते हैं।

**3. मोढेरा सूर्य मंदिर : गुजरात** – गुजरात के मेहसाणा जनपद में स्थित मोढेरा सूर्य मंदिर भारतीय स्थापत्य-कला, मूर्तिकला और प्राचीन खगोलीय ज्ञान के अद्भुत समन्वय का अनुपम उदाहरण है। यह मंदिर मोढेरा गाँव में स्थित है, जो मेहसाणा से लगभग 25 किलोमीटर तथा अहमदाबाद से लगभग 100 किलोमीटर से कुछ अधिक दूरी पर है।

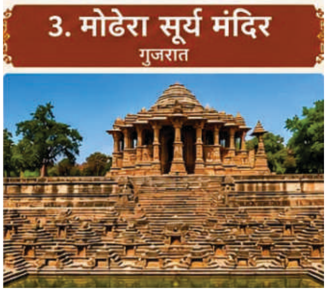


इस मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी के आरंभ में सोलंकी नरेश भीमदेव प्रथम के शासनकाल में कराया गया था। मंदिर परिसर में भव्य सूर्यकुंड, सभा-मंडप और गर्भगृह प्रमुख आकर्षण हैं। सूर्यकुंड की सीढ़ियों और उसके चारों ओर बने छोटे-छोटे देवालय इसकी स्थापत्य योजना को विशिष्ट बनाते हैं। मंदिर की स्थापत्य योजना में सूर्य की दिशा और गति का विशेष ध्यान रखा गया था। विषुव के अवसर पर सूर्य की किरणों के गर्भगृह की ओर पहुँचने की स्थापत्य व्यवस्था का उल्लेख इस मंदिर की विशेषताओं में किया जाता है। आज गर्भगृह में सूर्य की मूल प्रतिमा विद्यमान नहीं है। मंदिर की बाहरी दीवारों, स्तंभों और मंडपों पर देवी-देवताओं तथा रामायण, महाभारत और विभिन्न पौराणिक प्रसंगों से संबंधित अत्यंत सुंदर शिल्प उत्कीर्ण हैं। इन मूर्तियों में तत्कालीन कलाकारों की अद्भुत कल्पनाशीलता, सूक्ष्म शिल्प-कौशल और सौंदर्यबोध दिखाई देता है।

आज मोढेरा सूर्य मंदिर गुजरात की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का गौरव है। यह केवल सूर्योपासना का प्राचीन केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय स्थापत्य, मूर्तिकला और धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा की जीवंत गाथा है।

**4. दिलवाड़ा जैन मंदिर : राजस्थान** – अरावली पर्वतमाला में स्थित माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर भारत ही नहीं, विश्व की उत्कृष्ट संगमरमर शिल्पकला के अनुपम उदाहरण हैं। यह परिसर पाँच जैन मंदिरों का समूह है, जिनका निर्माण 11वीं से 13वीं शताब्दी के बीच विभिन्न चरणों में हुआ। इनमें विमल वसाही और लूण वसाही मंदिर अपनी अद्भुत स्थापत्य एवं शिल्पकला के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों के निर्माण और संरक्षण में विमल शाह तथा वास्तुपाल-तेजपाल जैसे प्रतिष्ठित जैन संरक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सफेद संगमरमर पर की गई इतनी सूक्ष्म और महीन नक्काशी यहाँ दिखाई देती है कि कठोर पत्थर भी मानो वस्त्र की कोमलता का आभास कराता है।

मंदिरों की छतों पर उकेरे गए कमल, नृत्य करती अप्सराएँ, हाथियों की कतारें, अलंकृत तोरण और बारीक जालीदार शिल्प भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्य-कौशल की उत्कृष्ट उपलब्धियों में गिने जाते हैं। प्रत्येक स्तंभ, छत और तोरण पर की गई कलात्मक नक्काशी शिल्पकारों के असाधारण धैर्य, कल्पनाशीलता और कौशल को दर्शाती है। जैन धर्म की अहिंसा, तप, त्याग और आत्मसंयम की भावना मंदिर परिसर के शांत एवं आध्यात्मिक वातावरण में सहज अनुभव की जा सकती है। स्थापत्य की भव्यता के साथ यहाँ की शांति और सूक्ष्म कलात्मकता इसे विशिष्ट बनाती है। दिलवाड़ा जैन मंदिर आज राजस्थान के प्रमुख सांस्कृतिक आकर्षणों में शामिल हैं और भारतीय संगमरमर शिल्पकला की अद्वितीय विरासत के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध हैं।

**5. लिंगराज मंदिर – भुवनेश्वर, ओडिशा** : ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर को 'मंदिरों का नगर' कहा जाता है। यहां स्थित लिंगराज मंदिर कलिंग स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट और भव्य उदाहरण है। इसका वर्तमान स्वरूप मुख्यतः 11वीं शताब्दी में सोमवंशी शासकों के काल में विकसित हुआ। मंदिर का लगभग ५५ मीटर ऊँचा शिखर दूर से ही इसकी भव्यता का परिचय देता है। लिंगराज मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और यहाँ शिव की हरिहर स्वरूप से संबंधित परंपरा भी विशेष महत्व रखती है। मंदिर परिसर में मुख्य देवालय के साथ विशाल जगमोहन, नाट्यमंडप और भोगमंडप इसकी विशिष्ट स्थापत्य योजना का हिस्सा हैं। ऊँचा शिखर, अलंकृत प्रवेशद्वार तथा पत्थरों पर की गई देवी-देवताओं और विभिन्न पौराणिक प्रसंगों की सूक्ष्म नक्काशी कलिंग शिल्पकला की उत्कृष्टता को दर्शाती है। इस मंदिर का अपना समृद्ध एवं प्राचीन इतिहास है। प्रसिद्ध स्थापत्य इतिहासकार जेम्स फर्ग्युसन (1808/1886) ने भी लिंगराज मंदिर को भारतीय मंदिर स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरणों में स्थान दिया था।

मंदिर से जुड़ी रुकुणा रथयात्रा और अन्य धार्मिक परंपराएँ श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखती हैं। वर्षभर यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं और मंदिर परिसर धार्मिक आस्था एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से जीवंत बना रहता है। लिंगराज मंदिर केवल भगवान शिव की आराधना का प्रमुख केंद्र नहीं, बल्कि ओडिशा की कलिंग स्थापत्य परंपरा और भारतीय सांस्कृतिक विरासत का गौरवशाली प्रतीक है।

**6. ईडाणा माता मंदिर – उदयपुर, राजस्थान** : अरावली की रमणीय पर्वतमालाओं के मध्य स्थित ईडाणा माता मंदिर राजस्थान का

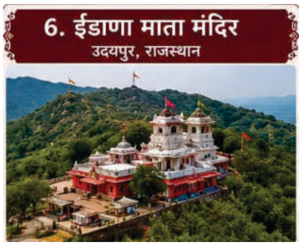


एक अत्यंत श्रद्धेय देवी-स्थल है। यह मंदिर उदयपुर से लगभग ६० किलोमीटर दूर बंबोरा क्षेत्र के निकट प्राकृतिक परिवेश में स्थित है। चारों ओर फैली पहाड़ियों, शांत वातावरण और प्राकृतिक सौंदर्य के बीच स्थित यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए विशेष आस्था का केंद्र है।

ईडाणा माता मंदिर की सबसे अनूठी विशेषता इससे जुड़ी अग्नि की लोकमान्यता है। श्रद्धालुओं में मान्यता है कि समय-समय पर माता के वस्त्रों में स्वतः अग्नि प्रकट होती है। भक्त इसे देवी की दिव्य शक्ति का प्रतीक मानते हैं। इसी कारण दूर-दूर से श्रद्धालु माता के दर्शन और आशीर्वाद के लिए यहाँ आते हैं। मंदिर का प्राकृतिक परिवेश इसकी आध्यात्मिक अनुभूति को और गहरा करता है। अरावली की पहाड़ियों के बीच स्थित यह स्थल धार्मिक आस्था के साथ प्रकृति की सुंदरता का भी अद्भुत अनुभव कराता है। नवरात्रि के अवसर पर यहाँ विशेष धार्मिक आयोजन और मेला आयोजित होता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं।

ईडाणा माता मंदिर में लोकविश्वास, देवी-भक्ति और प्रकृति का सुंदर संगम दिखाई देता है। यह स्थल राजस्थान की लोकआस्था, धार्मिक परंपरा और प्राकृतिक सांस्कृतिक विरासत का एक विशिष्ट उदाहरण है।

**7. अगस्तेश्वर स्वामी मंदिर – आंध्र प्रदेश** : आंध्र प्रदेश में

तिरुपति के निकट स्थित अगस्तेश्वर स्वामी मंदिर भगवान शिव को समर्पित एक श्रद्धेय मंदिर है। यह मंदिर महर्षि अगस्त्य से जुड़ी स्थानीय धार्मिक परंपराओं के कारण विशेष महत्व रखता है। यह तिरुपति शहर से लगभग 10-12 किलोमीटर दूर थोड़ा गाँव क्षेत्र में स्थित बताया जाता है। मंदिर की स्थापत्य परंपरा में दक्षिण भारतीय शैली की झलक दिखाई देती है। इसका गोपुरम्, सभा-मंडप तथा पत्थरों पर की गई कलात्मक सज्जा श्रद्धालुओं और कला-प्रेमियों को आकर्षित करती है। मंदिर परिसर का शांत वातावरण इसकी आध्यात्मिक अनुभूति को और गहरा करता है। महर्षि अगस्त्य से संबंधित पौराणिक कथाओं के कारण यह स्थान ऋषि परंपरा से भी जुड़ा हुआ माना जाता है। महाशिवरात्रि सहित प्रमुख धार्मिक पर्वों के अवसर पर यहाँ श्रद्धालु भगवान शिव का अभिषेक, पूजन एवं दर्शन करते हैं।

अगस्तेश्वर स्वामी मंदिर में शैव आस्था, ऋषि परंपरा, पौराणिक मान्यताओं और दक्षिण भारतीय मंदिर परंपरा का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। यह मंदिर आंध्र प्रदेश की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण स्थानीय केंद्र है।

**8. चामुंडेश्वरी मंदिर : मैसूर, कर्नाटक** – मैसूर की प्रसिद्ध

चामुंडी पहाड़ी पर स्थित चामुंडेश्वरी मंदिर देवी चामुंडेश्वरी को समर्पित है, जिन्हें महिषासुरमर्दिनी के रूप में पूजा जाता है। उन्हें मैसूर की अधिष्ठात्री देवी और आराध्य देवी के रूप में विशेष सम्मान प्राप्त है। पौराणिक मान्यता है कि देवी दुर्गा ने इसी क्षेत्र में महिषासुर का वध किया था। मैसूर के नाम को महिषासुर की कथा से जोड़ने वाली लोकमान्यता भी प्रचलित है।

वोडेयार राजवंश ने इस मंदिर के संरक्षण, विकास और विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मंदिर का सात-स्तरीय भव्य गोपुरम्, आकर्षक शिल्पांकन और विशाल नंदी प्रतिमा इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। चामुंडी पहाड़ी से दिखाई देने वाला मैसूर नगर का विहंगम दृश्य भी श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है। विश्वप्रसिद्ध मैसूर दशहरा उत्सव से चामुंडेश्वरी मंदिर का गहरा संबंध है। इस कारण यह मंदिर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र ही नहीं, बल्कि मैसूर की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का भी महत्वपूर्ण प्रतीक है।

**मन्दिर हमारी सांस्कृतिक विरासत :** भारत के ये प्राचीन मंदिर केवल पत्थरों से निर्मित भवन नहीं हैं, बल्कि हमारी सभ्यता की आत्मा, संस्कृति की पहचान और पूर्वजों की अद्भुत प्रतिभा के जीवंत स्मारक हैं। इनकी दीवारों में इतिहास बोलता है, मूर्तियों में कला मुस्कुराती है और इनके वातावरण में आध्यात्मिक चेतना का स्पंदन अनुभव होता है। ये मंदिर भारत की गौरवशाली मंदिर-परंपरा की केवल एक झलक भर हैं। देश के विभिन्न अंचलों में आज भी असंख्य ऐसे प्राचीन मंदिर और सांस्कृतिक धरोहरें विद्यमान हैं, जिनकी ऐतिहासिक, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक महत्ता व्यापक जनमानस तक पूरी तरह नहीं पहुँच सकी है।

इन अमूल्य धरोहरों का संरक्षण केवल सरकार का दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक उत्तरदायित्व भी है। जब हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हैं, तब हम केवल मंदिरों और मूर्तियों का संरक्षण नहीं करते, बल्कि अपनी सभ्यता, अपनी पहचान और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के अमूल्य स्रोत को भी सुरक्षित रखते हैं।

हमारी विरासत हमारा गौरव है- इसे जानना, समझना और सुरक्षित रखना हम सबका दायित्व है।

# हड्डियों और जोड़ों को स्वस्थ रखने के लिए नियमित करें व्यायाम

**डॉ. हितिन माथुर वरिष्ठ ऑर्थोपेडिक एवं जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन हैं। उन्हें ऑर्थोपेडिक्स, जॉइंट रिप्लेसमेंट, फुट एवं एंकल (पैर और टखने) की सर्जरी, आर्थ्रोस्कोपी तथा स्पोर्ट्स इंजरी के उपचार में 21 वर्षों से अधिक का अनुभव है। वर्तमान में वे मैक्स हेल्थकेयर, नोएडा एवं वैशाली से जुड़े हुए हैं। आपने एमबीबीएस की शिक्षा कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज, मैंगलोर (मणिपाल विश्वविद्यालय) से तथा ऑर्थोपेडिक्स में डीएनबी/स्नातकोत्तर प्रशिक्षण नई दिल्ली के प्रतिष्ठित सर गंगाराम अस्पताल से प्राप्त किया। इसके बाद यूनाइटेड किंगडम में ट्रॉमा एवं हिप-नी आर्थ्रोप्लास्टी तथा अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ अलाबामा, बर्मिंघम से फुट एवं एंकल सर्जरी में सुपर स्पेशियलिटी प्रशिक्षण प्राप्त किया। आप दिल्ली-एनसीआर के चुनिंदा प्रशिक्षित फुट एवं एंकल सर्जनों में शामिल हैं। इस विशेष साक्षात्कार में डॉ. माथुर ने शिवानी चतुर्वेदी के साथ संवाद के माध्यम से हड्डियों एवं जोड़ों के स्वास्थ्य, आधुनिक उपचार पद्धतियों तथा स्वस्थ जीवनशैली से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार साझा किए हैं। प्रस्तुत है संवाद के मुख्य अंश -**

**मानसून के दौरान जोड़ों के दर्द और जकड़न की शिकायतें क्यों बढ़ जाती हैं? क्या इसके पीछे कोई वैज्ञानिक कारण है या यह केवल एक धारणा है?**

मानसून के दौरान वायुमंडलीय दबाव में कमी, आर्द्रता (नमी) में वृद्धि तथा तापमान में गिरावट होती है। जिससे जोड़ों के आसपास के ऊतकों (टिश्यू) में सूजन आ जाती है। सूजन से नसों पर दबाव बढ़ता है और दर्द होता है। अधिक नमी और कम तापमान के कारण भी जोड़ों में जकड़न बढ़ जाती है। इसके अलावा, बरसात के मौसम में लोग अपेक्षाकृत कम शारीरिक गतिविधि करते हैं, जिससे भी जोड़ों की जकड़न और दर्द बढ़ जाता है।

**किन लोगों को मानसून में हड्डियों और जोड़ों से जुड़ी समस्याओं का सबसे अधिक खतरा रहता है?**

मौसम में होने वाले बदलावों का प्रभाव कुछ लोगों में अधिक पड़ता है। जैसे वृद्धजन, पहले से गठिया से पीड़ित व्यक्ति, जिनके जोड़ों में पहले कभी चोट लगी हो, कम अस्थि घनत्व (Bone Density) या विटामिन D की कमी वाले लोग, तथा अधिक वजन वाले लोग शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, जो लोग शारीरिक रूप से कम सक्रिय होते हैं, वे भी मौसम के बदलाव का प्रभाव अपने जोड़ों पर अधिक महसूस कर सकते हैं।

**कम धूप मिलने से विटामिन D की कमी कितनी गंभीर हो सकती है? इससे बचने के लिए आपकी क्या सलाह है?**

विटामिन D शरीर में मुख्यतः सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने पर त्वचा द्वारा निर्मित होता है और यह हड्डियों एवं मांसपेशियों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। पर्याप्त मात्रा में विटामिन D प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन लगभग 30 मिनट तक सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे के बीच चेहरे, हाथों और बाजुओं को धूप के संपर्क में

रखना लाभकारी माना जाता है। हालाँकि, कुछ व्यक्तियों में त्वचा द्वारा विटामिन D का निर्माण अपेक्षाकृत कम होता है। इनमें गहरे रंग की त्वचा वाले लोग, वृद्धजन, मोटापे से ग्रस्त व्यक्ति, लंबे समय तक घर के भीतर रहने वाले, अधिक प्रदूषण वाले क्षेत्रों में रहने वाले तथा पूरे शरीर को ढकने वाले वस्त्र पहनने वाले लोग शामिल हैं। ऐसे मामलों में अधिक समय तक धूप में रहना, विटामिन D युक्त संतुलित आहार लेना तथा आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सकीय परामर्श के अनुसार विटामिन D सप्लीमेंट का सेवन करना उचित हो सकता है।

**मजबूत हड्डियों के लिए संतुलित आहार में कौन-कौन से पोषक तत्व अनिवार्य हैं? क्या केवल कैल्शियम पर्याप्त है?**

स्वस्थ एवं मजबूत हड्डियों के लिए केवल कैल्शियम ही नहीं, बल्कि विटामिन D, प्रोटीन, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, विटामिन C और विटामिन K जैसे पोषक तत्वों का संतुलित सेवन भी आवश्यक है।

• कैल्शियम हड्डियों का प्रमुख निर्माणकारी तत्व है। इसके अच्छे स्रोत हैं – दूध एवं दुग्ध उत्पाद, रागी, हरी पत्तेदार सब्जियाँ, सोयाबीन, टोफू, बादाम, तिल, चिया सीड्स तथा छोटी मछलियाँ।

• विटामिन D कैल्शियम के अवशोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे नियमित धूप, वसायुक्त मछलियों, अंडे की जर्दी, फोर्टिफाइड खाद्य पदार्थों तथा आवश्यकता होने पर चिकित्सकीय सलाह से सप्लीमेंट्स के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

• प्रोटीन हड्डियों की संरचना (Bone Matrix) को मजबूत बनाता है। इसके प्रमुख स्रोत हैं-दूध, अंडे, दालें, चना, सोया, मेवे, बीज, मछली और कम वसा वाला मांस।

इसके अतिरिक्त, अधिक नमक वाले प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ, शक्करयुक्त पेय, धूम्रपान तथा अत्यधिक शराब का सेवन हड्डियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। इसलिए संतुलित आहार, नियमित शारीरिक गतिविधि और स्वस्थ जीवनशैली अपनाना दीर्घकालिक अस्थि स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है

**क्या कैल्शियम और विटामिन D के सप्लीमेंट बिना चिकित्सकीय सलाह के लेने चाहिए?**

नहीं। शरीर में विटामिन D की मात्रा जांच करने के बाद ही डॉक्टर यह तय करता है कि आप को कितनी मात्रा में सप्लीमेंट की आवश्यकता है। विटामिन D एक वसा में घुलनशील विटामिन है, इसलिए इसकी अधिक मात्रा लेने से शरीर में विषाक्तता हो सकती है। जिसके कारण हड्डियों में दर्द, पेट दर्द तथा अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ शामिल हो सकती हैं।

यदि आपको किडनी की बीमारी, पहले कभी किडनी स्टोन हो चुका हो, हृदय रोग, सारकॉइडोसिस या हाइपरपैराथायरॉइडिज्म जैसी कोई बीमारी है, तो यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी स्थितियों में बिना चिकित्सकीय सलाह के कैल्शियम या विटामिन D की अधिक मात्रा लेने से किडनी स्टोन बनने या रक्त वाहिकाओं में कैल्शियम जमा होने का जोखिम बढ़ सकता है।

**हड्डियों को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन किस प्रकार का व्यायाम सबसे अधिक लाभकारी है? क्या वर्षा ऋतु में व्यायाम की दिनचर्या में कोई बदलाव करना चाहिए?**

हड्डियों और जोड़ों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित व्यायाम उतना ही आवश्यक है जितना संतुलित आहार। विशेषज्ञों के अनुसार निम्नलिखित तीन प्रकार के व्यायाम सबसे अधिक लाभकारी हैं–

1. वेट-बेयरिंग (Weight-Bearing) व्यायाम : तेज चाल से चलना, हल्की दौड़, सीढ़ियाँ चढ़ना, रस्सी कूदना, लो-इम्पैक्ट एरोबिक्स, नृत्य तथा बैडमिंटन या टेनिस जैसे खेल हड्डियों पर नियंत्रित दबाव डालते हैं। इससे विशेष रूप से कूल्हों, रीढ़ और पैरों की हड्डियाँ मजबूत होती हैं तथा नई हड्डी बनने की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है।

2. स्ट्रेंथ ट्रेनिंग (Strength Training) : स्क्वाट्स, लंजेस, कुर्सी से उठना-बैठना, एड़ी उठाने का व्यायाम, पुश-अप्स, रेजिस्टेंस बैंड, डम्बल या शरीर के भार से किए जाने वाले व्यायाम मांसपेशियों और हड्डियों दोनों को मजबूत बनाते हैं। नियमित अभ्यास से हड्डियों का घनत्व बढ़ता है और फ्रैक्चर का जोखिम कम हो सकता है।

3. बैलेंस ट्रेनिंग (Balance Training) : एक पैर पर खड़े होना, एड़ी-पंजा मिलाकर चलना, वृक्षासन एवं वीरभद्रासन जैसे योगासन तथा स्पाइनल एक्सटेंशन व्यायाम संतुलन और रीढ़ की मजबूती बढ़ाते हैं। विशेष रूप से बुजुर्गों में ये व्यायाम गिरने और उससे होने वाली चोटों के जोखिम को कम करने में सहायक होते हैं।

कितना व्यायाम पर्याप्त है?

- प्रतिदिन 30-40 मिनट तेज चाल से पैदल चलें।
- सप्ताह में 2-3 दिन स्ट्रेंथ और बैलेंस ट्रेनिंग अवश्य करें।

# संघ घोष वादकों का इतिहास
## महत्व एवं विकास यात्रा

**कुणाल**
**शोधार्थी**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा केवल शारीरिक व्यायाम का केंद्र नहीं है, बल्कि अनुशासन, संगठन, समरसता और राष्ट्रभाव के संस्कारों का जीवंत माध्यम है। शाखा के विविध कार्यक्रमों में घोष का विशेष स्थान है। घोष केवल वाद्ययंत्रों का समूह नहीं, बल्कि भारतीय संगीत परंपरा, संगठनात्मक अनुशासन और सांस्कृतिक चेतना का सशक्त प्रतीक है। संघ में घोष का उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं, बल्कि स्वयंसेवकों में एकरूपता, उत्साह, अनुशासन, सामूहिकता तथा राष्ट्रभक्ति का भाव जागृत करना है। लगभग एक शताब्दी की अपनी विकास यात्रा में संघ का घोष भारतीयकरण, मौलिकता और उत्कृष्ट संगीत-साधना का प्रेरक उदाहरण बन चुका है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना वर्ष 1925 में हुई। प्रारंभिक शाखाओं में व्यायाम, खेल और सामान्य चर्चा ही प्रमुख कार्यक्रम थे। समय के साथ शाखा में समता तथा संचलन (मार्च-पास्ट) का अभ्यास प्रारंभ हुआ। संचलन को अधिक प्रभावी, आकर्षक और अनुशासित बनाने के लिए यह विचार सामने आया कि यदि इसके साथ वाद्ययंत्रों का समन्वित प्रयोग किया जाए तो स्वयंसेवकों का उत्साह और संगठनात्मक प्रभाव दोनों बढ़ेंगे। इसी विचार के परिणामस्वरूप स्थापना के केवल दो वर्ष बाद, 1927 में संघ के शारीरिक विभाग में घोष का समावेश किया गया।

घोष की शुरुआत सरल नहीं थी। उस समय दो प्रमुख कठिनाइयाँ थीं। पहली, घोष में प्रयुक्त वाद्ययंत्र अत्यंत महंगे थे और मुख्यतः सेना के पास ही उपलब्ध रहते थे। दूसरी, उनके प्रशिक्षक भी केवल सैन्य अधिकारी होते थे। संघ के पास न तो पर्याप्त आर्थिक संसाधन थे और न ही सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करने की सहज सुविधा। ऐसे समय में संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के प्रयासों से एक सेवानिवृत्त बैंड मास्टर द्वारा स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण दिलाया गया। इसके बाद स्वयंसेवकों ने निरंतर अभ्यास करते हुए घोष की प्रारंभिक परंपरा विकसित की।

प्रारंभ में पश्चिमी शैली के बैंड और धुनों का प्रयोग किया जाता था, परंतु स्वयंसेवकों को अनुभव हुआ कि भारतीय मन को भारतीय संगीत और भारतीय परंपरा से जुड़े स्वरों में अधिक आत्मीयता मिलती है। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि घोष को पूर्णतः भारतीय स्वरूप दिया जाए। महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण के पाञ्चजन्य तथा अर्जुन के देवदत्त शंख की परंपरा से प्रेरणा लेते हुए स्वयंसेवकों ने भारतीय रागों

पर आधारित नई घोष रचनाएँ तैयार की। राग केदार, भूप, आसावरी आदि रागों में अनेक मौलिक धुनों की रचना हुई। साथ ही पश्चिमी वाद्ययंत्रों को भी भारतीय नाम दिए गए। उदाहरण के लिए, साइड ड्रम को आनक, ड्रम को प्रणव, बिगुल को शंख और ट्रायंगल को त्रिभुज कहा गया। यह केवल नाम परिवर्तन नहीं था, बल्कि घोष का सांस्कृतिक भारतीयकरण था, जिसने उसे भारतीय संगीत परंपरा से जोड़ दिया।

**संघ में घोष प्रारंभ करने के पीछे कारण :** संघ में घोष को प्रारंभ करने के पीछे अनेक व्यावहारिक एवं सांस्कृतिक उद्देश्य थे। इसका प्रमुख उद्देश्य संचलन में अनुशासन और एकरूपता लाना, स्वयंसेवकों में उत्साह और आत्मविश्वास का संचार करना, तथा सामूहिक कार्य में लय, ताल और समन्वय विकसित करना था। इसके साथ ही घोष के माध्यम से भारतीय संगीत परंपरा को आधुनिक संगठनात्मक जीवन से जोड़ा गया और राष्ट्रभक्ति तथा सांस्कृतिक गौरव का वातावरण निर्मित किया गया। यह व्यक्तिगत प्रतिभा को सामूहिक साधना में रूपांतरित करने का भी एक सशक्त माध्यम बना।

घोष का प्रत्येक स्वर स्वयंसेवकों को यह संदेश देता है कि व्यक्तिगत क्षमता तभी प्रभावी होती है जब वह संगठन की सामूहिक लय से जुड़ती है। संघ के दृष्टिकोण में घोष केवल संगीत नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का माध्यम है। घोष के अभ्यास से स्वयंसेवकों में समयपालन, अनुशासन, धैर्य, एकाग्रता और टीम भावना का विकास होता है। प्रत्येक वादक को अपने स्वर, ताल और गति को अन्य साथियों के साथ पूर्ण समन्वय में रखना होता है। यही अभ्यास संगठनात्मक जीवन का भी आधार बनता है।

घोष शाखा, पथ-संचलन, उत्सव और विशेष कार्यक्रमों को गरिमामय बनाता है। घोष की मधुर ध्वनि वातावरण में उत्साह भरती है तथा समाज के सामान्य नागरिकों पर भी सकारात्मक प्रभाव छोड़ती है। यही कारण है कि संघ के लगभग सभी प्रमुख आयोजनों में घोष की विशेष भूमिका होती है।

**घोष में प्रयुक्त प्रमुख वाद्ययंत्र एवं उनका महत्त्व :** संघ के घोष में अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र प्रयुक्त होते हैं, जिन्हें उनके स्वरूप के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। इनमें प्रमुख हैं–

1. **आनक :** आनक एक ताल वाद्य है, जो संचलन की मूल लय निर्धारित करता है। इसकी गंभीर और स्पष्ट ध्वनि पूरे घोष को स्थिरता प्रदान करती है। संचलन के दौरान सभी वादकों और स्वयंसेवकों की गति को नियंत्रित करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है।

2. **पणव :** पणव भी ताल वाद्य है, जिसकी ध्वनि दूर तक सुनाई देती है। इसका प्रयोग संकेत देने, लय बनाए रखने तथा संपूर्ण घोष का ध्यान एक केंद्र पर बनाए रखने के लिए किया जाता है।

3. **त्रिभुज :** त्रिभुज धातु से निर्मित घन वाद्य है। इसकी स्पष्ट और चमकदार ध्वनि ताल को संतुलित करती है तथा घोष की संगीतात्मक सुंदरता को बढ़ाती है।

4. **झल्लरी :** झल्लरी (झांझ) लय को प्रभावी बनाती है। विशेष अवसरों पर इसकी ध्वनि घोष की ऊर्जा और प्रभाव को कई गुना बढ़ा देती है।

5. **वंशी :** वंशी घोष का प्रमुख स्वर वाद्य है। संघ की अधिकांश रचनाएँ वंशी पर आधारित होती हैं। इसकी मधुर ध्वनि भारतीय रागों की अभिव्यक्ति का मुख्य माध्यम है और घोष को सांगीतिक सौंदर्य प्रदान करती है।

6. **शंख :** भारतीय संस्कृति में शंख विजय, पवित्रता और मंगल का प्रतीक माना जाता है। संघ के घोष में इसका विशेष स्थान है। शंख की ध्वनि आत्मविश्वास, उत्साह और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करती है। यह भारत की प्राचीन सैन्य एवं धार्मिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। संघ में घोष केवल वादन तक सीमित नहीं है। इसके लिए विशेष प्रशिक्षण वर्ग, शिविर और नियमित अभ्यास आयोजित किए जाते हैं। घोष प्रमुख के नेतृत्व में सभी वादक निश्चित गठन में खड़े होते हैं और प्रत्येक वाद्य की संख्या तथा स्थान निर्धारित रहता है। संचलन, संकेत, ताल, रचना तथा अनुशासन का विस्तृत प्रशिक्षण दिया जाता है। इस व्यवस्था के कारण घोष एक संगठित और प्रभावशाली इकाई के रूप में कार्य करता है।

घोष की यात्रा एक शंख और एक आनक से प्रारंभ होकर आज हजारों प्रशिक्षित घोष वादकों तक पहुंच चुकी है। प्रारंभिक वर्षों में सीमित संसाधनों के बावजूद स्वयंसेवकों ने निरंतर अभ्यास, अनुसंधान और भारतीय संगीत परंपरा के अध्ययन के आधार पर घोष को समृद्ध बनाया। संघ के प्रथम अखिल भारतीय घोष प्रमुख श्री सुब्बू श्रीनिवास जी के नेतृत्व में देशभर में घोष वर्ग और प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए, जिनसे हजारों कुशल घोष वादक तैयार हुए। समय के साथ घोष में केवल पारंपरिक वाद्य ही नहीं, बल्कि आधुनिक वाद्यों का भी समावेश हुआ और उन पर भारतीय रागों पर आधारित मौलिक रचनाएँ विकसित की गईं।

घोष की उपलब्धियों में वर्ष 1982 के एशियाई खेलों का विशेष उल्लेख किया जाता है। उस अवसर पर भारतीय नौसेना के बैंड ने स्वयंसेवकों द्वारा रचित 'शिवराज' धुन का वादन किया। इसे विश्व स्तर पर प्रस्तुत होने वाली संघ घोष की पहली प्रमुख रचना माना जाता है। बाद में भारतीय नौसेना के बैंड द्वारा स्वयंसेवकों की लगभग 40 रचनाओं का भी वादन किया गया। आज संघ में लगभग 70,000 प्रशिक्षित घोष वादक कार्यरत हैं, जो इसकी निरंतर प्रगति और व्यापक स्वीकार्यता का प्रमाण हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घोष केवल वाद्ययंत्रों का समूह नहीं, बल्कि संगठन, अनुशासन, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रभक्ति का सजीव प्रतीक है। इसकी शुरुआत सीमित संसाधनों से हुई, किंतु स्वयंसेवकों की साधना, समर्पण और मौलिक चिंतन ने इसे एक विशिष्ट भारतीय स्वरूप प्रदान किया। घोष की प्रत्येक धुन भारतीय सांस्कृतिक चेतना, सामूहिक अनुशासन और राष्ट्र समर्पण का संदेश देती है। लगभग एक शताब्दी की यात्रा के बाद आज घोष विश्व के समक्ष भारतीय संगीत, संगठनात्मक क्षमता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास का एक प्रेरणादायी उदाहरण बनकर स्थापित हो चुका है।

# जलवायु परिवर्तन से भीषण संकट में पौध-प्रजातियां

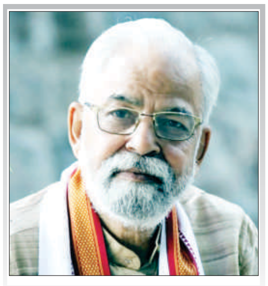

ज्ञानेन्द्र रावत
वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद

जलवायु परिवर्तन अब न केवल बच्चों का भविष्य छीन रहा है, लोगों में अकेलापन बढ़ा रहा है, महिलाओं पर गंभीर असर डाल रहा है, मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है, दुनिया की बहुमूल्य धरोहरों के अस्तित्व के संकट को बढ़ा रहा है, वह दुनिया की हजारों पौध-प्रजातियों के घर ही नहीं छीन रहा है बल्कि उन पर विलुप्ति का खतरा भी मंडराने लगा है। दुनिया के हालिया शोध और अध्ययन इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं। सबसे बड़ी चिंता इस बात की है कि यदि जलवायु परिवर्तन की रफ्तार यही बरकरार रही तो इस सदी के आखिर तक दुनिया की हजारों पौध-प्रजातियां अपने प्राकृतिक आवास के बड़े हिस्से से न केवल महरूम हो जायेंगी, बल्कि बहुतेरी पौध-प्रजातियां विलुप्ति के कगार तक पहुंच जायेंगीं। दरअसल दुनियाभर में बढ़ता तापमान अब सिर्फ इंसान और जानवरों के लिए ही नहीं, बल्कि पेड़-पौधों के लिए भी खतरनाक बनता जा रहा है। पौधों की विविधता में आ रही तेजी से गिरावट इस खतरे को और बढ़ा रही है। असलियत में पेड़-पौधों की विविधता में गिरावट का असर सीधे-सीधे इंसानी जीवन और ग्लोबल वार्मिंग दोनों पर भी पड़ेगा। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि कम और ज्यादा बारिश तथा बढ़ते तापमान के कारण पौधों को जिंदा रखने वाला माहौल दिनोंदिन सिकुड़ता चला जा रहा है। हालात इतने खराब हो गये हैं कि जलवायु परिवर्तन के चलते सात से सोलह फीसदी पौधे ऐसे हैं जो अपने रहने की नब्बे फीसदी से भी ज्यादा जगह खोने के कगार पर हैं। सच कहा जाये तो अब वे विलुप्ति के कगार पर पहुंच गये हैं। इसका असर इंसानों पर पड़े बिना नहीं रहेगा। क्योंकि पेड़-पौधे कार्बन सोखते हैं, वे मिट्टी को बांध कर रखते हैं। यही नहीं वे भोजन और दवाईयां भी देते हैं। जलवायु परिवर्तन से पौधे घटेंगे तो धरती पर कार्बन डाइऑक्साइड गैस को सोखने वाले पेड़-पौधे कम हो जायेंगे जिसका मौसम पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

देखा जाये तो किसी पौधे का आवास केवल जमीन का एक हिस्सा नहीं होता। बल्कि वह तापमान, बारिश, मिट्टी, नमी, छाया और पर्यावरणीय संतुलन जैसी बहुतेरी परिस्थितियों का मेल होता है। जलवायु परिवर्तन इन सारी चीजों को बहुत ही तेजी से बदल रहा है। यही वजह है कि पौधे अपने अस्तित्व की खातिर अपने लिए उपयुक्त मौसम का पीछा करने की कोशिश कर रहे हैं। तापमान बढ़ने से पेड़-पौधों की बहुतेरी प्रजातियां पर्वतीय इलाकों में ऊंचाई की ओर या फिर ठंडे इलाकों की ओर रुख कर रही हैं। देश का हिमालयी अंचल इसका जीता-जागता उदाहरण है जहां तापमान वृद्धि के चलते पौधे पहाड़ों की ऊंचाई की ओर बढ़ रहे हैं। यह हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र में आ रहे बदलावों का एक प्रमुख संकेतक है। यहां लद्दाख से लेकर भूटान तक हिमालय के छह अलग-अलग क्षेत्रों में वनस्पति की सीमा ऊपर की ओर खिसकी है। यह माउंट एवरेस्ट के घर खुंबू में सालाना 1.42 मीटर से लेकर नेपाल के मानथांग में 6.95 मीटर तक रही है। गौरतलब है कि यह इलाका जो बर्फ कम होने

और अधिक गर्मी के कारण पहले सालभर बर्फ से ढका रहता था, अब पौधों के उगने के लिए अनुकूल होता जा रहा है। यहां इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि अल्पाइन इलाके में कठोर वातावरण है जो छोटे पौधों और लकड़ी की झाड़ियों के द्वारा नियंत्रित होता है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण यहां हिमालय में स्थितियां तेजी से बदल रही हैं और सभी क्षेत्र में वनस्पति रेखा लगातार ऊपर की ओर बढ़ रही है। सच तो यह है कि हिमालय वैश्विक औसत से तेजी से गर्म हो रहा है। नतीजतन तापमान में बदलाव व बर्फ की परत में परिवर्तन से लेकर पानी व पोषक तत्वों की उपलब्धता में भी काफी बदलाव आया है। यह निष्कर्ष ऐक्सेटर यूनिवर्सिटी के पृथ्वी विज्ञान विभाग के अध्ययन का है जिसके शोधकर्ता कैरन एंडरसन का कहना है कि अल्पाइन पौधे  मिट्टी को छाया देते हैं, बर्फ को फंसा कर रख सकते हैं, पानी के भंडार और प्रवाह को बदल सकते हैं और इस प्रकार वे जल चक्र को गहराई से प्रभावित कर सकते हैं।

हकीकत यह है कि यहां अकेले तापमान बढ़ोतरी ही समस्या नहीं है। बारिश की कमी भी एक अहम वजह और है जिसके कारण मिट्टी सूख रही है। इससे पौधों के लिए नये उपयुक्त स्थान तक पहुंचना मुश्किल हो रहा है। नतीजतन वे बीज, हवा, पानी या फिर जानवरों के जरिये फैलने की कोशिश करते हैं। यहां सबसे बड़ी समस्या यह है कि यदि पौधों को नये ऊंचाई वाले इलाकों तक पहुंचने की छूट भी मिल जाये, तब भी उनकी विलुप्ति का खतरा कम नहीं होगा। कारण बहुतेरी जगह उनके लिए उपयुक्त वातावरण कहें या पर्यावरण तेजी से अनुकूल नहीं रहता है। येल यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के शोध से इसका खुलासा हुआ है जिसमें उन्होंने दुनियाभर में कुल सरसठ हजार से भी ज्यादा वैस्कुलर पौध प्रजातियों का अध्ययन किया जो समूची दुनिया में ज्ञात कुल पौध प्रजातियों की लगभग अट्ठारह फीसदी हैं। शोध की मानें तो आर्कटिक क्षेत्र के ठंडे मौसम वाले पौधों पर खतरा बढ़ सकता है। कारण अत्याधिक ठंड वाले इलाके तेजी से सिकुड़ते चले जा रहे हैं। इसके विपरीत अमेरिका के पश्चिमी हिस्सों में और भूमध्यसागर क्षेत्र में सूखा और मिट्टी में नमी की कमी होगी और जंगल की आग का जोखिम बढ़ेगा और तो और आस्ट्रेलिया के तटीय इलाकों में समुद्री सीमायें पौधों के नये इलाकों में फैलने में बाधाएं बन सकती हैं। सबसे आश्चर्यजनक संभावना ऊष्ण कटिबंधीय इलाकों में यानी धरती की अट्ठाइस फीसदी जमीन पर नयी पौध प्रजातियों के पहुंचने की व्यक्त की गयी है। इस सबके बावजूद यह प्रकृति के सुरक्षित होने का संकेत नहीं है।

दावे कुछ भी किये जायें हकीकत यह है और दुनियाभर के शोधों-अध्ययनों का निष्कर्ष यह भी है कि मौजूदा हालात को देखते हुए जलवायु परिवर्तन को रोकने की कोशिशें नाकाफी हैं और यह भी सच है कि जलवायु परिवर्तन का संकट दिनोंदिन विकराल होता जा रहा है। वैश्विक तापमान को अगले सौ वर्षों में डेढ़ डिग्री सेल्सियस से ऊपर नहीं बढ़ने देने का लक्ष्य हासिल कर लेने के बावजूद विश्व के संवेदनशील क्षेत्रों को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचा पाना आसान नहीं होगा। क्योंकि आर्कटिक और दक्षिण पूर्व एशियाई मानसून जैसे विश्व के क्षेत्रों को होने वाली अपरिवर्तनीय क्षति से रोक पाना बहुत ही दुष्कर कार्य है। ऐसी स्थिति में भारत को विभिन्न क्षेत्रों के लिए अपने उत्सर्जन लक्ष्य नये सिरे से तय करने की जरूरत है। जबकि क्लाइमेट ट्रांसपेरेंसी की रिपोर्ट की मानें तो 2030 तक भारत के ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी करीब-करीब दोगुने की बढ़ोतरी होने की आशंका है। फिर जलवायु परिवर्तन से वेलकम ट्रस्ट और क्लाइमेट ओपिनियन रिसर्च के अध्ययन द्वारा सेहत पर होने वाले भयावह खतरे की चेतावनी ने चिंता को और बढ़ा दिया है कि जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरण की चिंता नहीं रह गया है, बल्कि यह अब लोगों के शरीर, उनकी सांस, उनके बच्चों की सेहत की चिंताओं तक पहुंच गया है। इसलिए जीवन शैली में बदलाव समय की महती आवश्यकता है तभी हम जलवायु परिवर्तन के दानव से कुछ हदतक मुकाबला कर पाने में कामयाब हो सकते हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद हैं।)

# डिजिटल भारत में महिलाओं के अधिकार

**डॉ. अंजू राठी**
**सदस्य, इंडियन लीगल सर्विस**

हर पीढ़ी अपने समय और परिस्थितियों के अनुरूप महिलाओं के अधिकारों को अपने दृष्टिकोण से देखती है। कुछ दशक पहले तक महिलाओं के अधिकारों पर होने वाली चर्चाएँ मुख्यतः उनकी शिक्षा, रोजगार, उत्तराधिकार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी तक सीमित थीं। एक समय ऐसा भी था, जब किसी महिला की अपने अधिकारों तक पहुँच केवल कानून पर ही नहीं, बल्कि भौगोलिक दूरी पर भी निर्भर करती थी। छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए सरकारी कार्यालयों के बार-बार चक्कर लगाने पड़ते थे, बैंक खाता खोलने के लिए अक्सर दूसरों की सहायता लेनी पड़ती थी। शिकायत दर्ज कराने के लिए पुलिस थाने या न्यायालय तक जाना पड़ता था। विशेष रूप से ग्रामीण भारत की महिलाओं के लिए न्याय तक पहुँच की यात्रा वास्तव में एक भौतिक यात्रा हुआ करती थी, जो कानून द्वारा प्रदत्त अधिकारों के साथ-साथ भौगोलिक दूरी, सामाजिक बाधाओं और आर्थिक परिस्थितियों से भी प्रभावित होती थी।

अब यह स्थिति बदलने लगी है। आज स्मार्टफोन केवल संचार का माध्यम नहीं रह गया है। यह बैंक, कक्षा, बाजार, डिजिटल दस्तावेजों का भंडार, सूचना का स्रोत और तेजी से नागरिकों तथा राज्य के बीच एक सेतु बनता जा रहा है। डिजिटल युग ने महिलाओं के अधिकारों का अर्थ नहीं बदला है, बल्कि उन अधिकारों के प्रयोग का तरीका बदल दिया है। आज कोई महिला सरकारी लाभ सीधे अपने बैंक खाते में प्राप्त कर सकती है, आधिकारिक दस्तावेजों तक पहुँच बना सकती है, कानूनी जानकारी प्राप्त कर सकती है, अपना व्यवसाय संचालित कर सकती है या अपने घर से बाहर निकले बिना साइबर अपराध की शिकायत दर्ज करा सकती है। जो सुविधाएँ पहले भौतिक पहुँच पर निर्भर थीं, वे अब तेजी से डिजिटल रूप से सुलभ होती जा रही हैं।

इसलिए आज महिलाओं के अधिकारों की रक्षा का अर्थ डिजिटल परिवेश में उनके अधिकारों की रक्षा करना भी है। प्रौद्योगिकी ने सूचना, अवसरों और सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच को सीमित करने वाली अनेक बाधाओं को कम किया है। साथ ही, इसने महिलाओं को उन सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बाधाओं को चुनौती देने तथा समाप्त करने में भी सक्षम बनाया है, जिनकी कल्पना एक पीढ़ी पहले तक कठिन थी।

भारत के डिजिटल परिवर्तन की सबसे उल्लेखनीय विशेषता केवल यह नहीं है कि उसने शासन-व्यवस्था को डिजिटल बना दिया है, बल्कि यह है कि उसने नागरिकों और राज्य के बीच की दूरी को कम करना शुरू कर दिया है। डिजिटल इंडिया और देश के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से आधार, जनधन, यूपीआई और डिजीलॉकर जैसी पहलों ने नागरिकों और सार्वजनिक संस्थानों के बीच संबंधों को सरल बनाया है। इन पहलों का महत्व केवल तकनीकी नवाचार में नहीं, बल्कि पहचान, बैंकिंग, दस्तावेजीकरण और सार्वजनिक सेवाओं की पहुँच से जुड़ी बाधाओं को कम करने में भी है।

महिलाओं के लिए इन परिवर्तनों के व्यावहारिक परिणाम सामने आए हैं। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (Direct Benefit Transfer) ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है, क्योंकि छात्रवृत्ति, पेंशन और कल्याणकारी योजनाओं के लाभ सीधे लाभार्थियों तक पहुँचते हैं, जिससे बिचौलियों और धन के दुरुपयोग की संभावनाएँ कम होती हैं। आज महिला-नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूह, कारीगर और छोटे उद्यमी डिजिटल भुगतान तथा ऑनलाइन बाजारों के माध्यम से औपचारिक अर्थव्यवस्था में अधिक आत्मविश्वास के साथ भाग ले रहे हैं। यह परिवर्तन केवल तकनीकी या प्रशासनिक नहीं है, बल्कि सामाजिक भी है, क्योंकि इससे महिलाओं की आर्थिक और सार्वजनिक जीवन में स्वतंत्र भागीदारी का दायरा बढ़ रहा है। अलग-अलग देखने पर ये केवल सामान्य तकनीकी सुधार प्रतीत हो सकते हैं, लेकिन सामूहिक रूप से इन्होंने असंख्य महिलाओं के दैनिक जीवन को चुपचाप बदल दिया है।

प्रौद्योगिकी ने न्याय व्यवस्था तक पहुँचने के तरीके को भी बदल दिया है। पीढ़ियों से न्याय व्यवस्था का संबंध अदालतों, भौतिक फाइलों

और बार-बार व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने से जोड़ा जाता रहा है। आज कानूनी अधिकारों, न्यायालयीन सेवाओं और शिकायत निवारण तंत्र से संबंधित जानकारी तेजी से एक क्लिक पर उपलब्ध हो रही है। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल ने ऑनलाइन अपराधों की शिकायत दर्ज करना आसान बनाया है। ई-कोर्ट्स, ई-फाइलिंग और वर्चुअल सुनवाई के माध्यम से न्याय वितरण प्रणाली के कई पहलू अधिक सुलभ हुए हैं। विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए, जिनके लिए दूरी, नौकरी या पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण बार-बार न्यायालय जाना कठिन हो सकता है, यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। प्रौद्योगिकी संस्थाओं और मानवीय विवेक का स्थान नहीं ले सकती, लेकिन वह उन संस्थाओं को आम नागरिकों के लिए अधिक सुलभ अवश्य बना सकती है, जिनकी सेवा के लिए वे अस्तित्व में हैं।

हालाँकि, डिजिटल अवसरों के विस्तार के साथ नई प्रकार की असुरक्षाएँ भी सामने आई हैं। प्रत्येक तकनीकी क्रांति अपने साथ दो समानांतर इतिहास लेकर आती है एक अवसरों का और दूसरा शोषण का। सोशल मीडिया के विस्तार ने व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग का खतरा बढ़ाया है। महिलाएँ अक्सर ऑनलाइन ट्रोलिंग, अपमानजनक संदेशों और धमकियों का निशाना बनती हैं। कई मामलों में उनकी तस्वीरें और वीडियो बिना सहमति के साझा किए जाते हैं। ऑनलाइन उत्पीड़न, साइबर स्टॉकिंग, पहचान की चोरी, वित्तीय धोखाधड़ी और व्यक्तिगत जानकारी का अनधिकृत प्रसार महिलाओं को ऐसे तरीकों से प्रभावित कर रहा है, जिनका प्रभाव आभासी दुनिया से कहीं आगे तक जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) भी इसका अपवाद नहीं है। जहाँ एक ओर AI शिक्षा, स्वास्थ्य, शासन और शोध के क्षेत्र में व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर इसने विश्वसनीय दिखाई देने वाले डीपफेक और हेरफेर किए गए डिजिटल कंटेंट को तैयार करना भी आसान बना दिया है। ऐसे कंटेंट महिलाओं की गरिमा, निजता और प्रतिष्ठा को स्थायी नुकसान पहुँचा सकते हैं। ये केवल प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग के मामले नहीं हैं, बल्कि निजता, गरिमा, स्वायत्तता और संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता की संवैधानिक गारंटी से जुड़े गंभीर प्रश्न भी उठाते हैं।

इसी संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय का के.एस. पुट्टस्वामी (सेवानिवृत्त) बनाम भारत संघ का निर्णय विशेष महत्व रखता है। निजता के अधिकार को संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभिन्न अंग मानकर न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि मानवीय संवाद और गतिविधियाँ ऑनलाइन स्थानांतरित हो जाने मात्र से संवैधानिक स्वतंत्रताओं का महत्व कम नहीं हो जाता। आज निजता केवल व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गरिमा, स्वायत्तता और बिना भय के सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की स्वतंत्रता की भी रक्षा करती है। डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 भी व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा और निरंतर डिजिटल नवाचार के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

हर नया कानून एक वादे के रूप में शुरू होता है। वह वादा वास्तविक सुरक्षा में तभी बदलता है, जब नागरिक यह जानते हों कि उस कानून का उपयोग कैसे करना है। प्रत्येक नागरिक को यह जानकारी होनी चाहिए कि ऑनलाइन धोखाधड़ी को कैसे पहचाना जाए, व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा कैसे की जाए, मजबूत डिजिटल सुरक्षा उपायों का उपयोग कैसे किया जाए और साइबर अपराध की शिकायत बिना झिझक कैसे दर्ज की जाए। परिवार, विद्यालय, शैक्षणिक संस्थान, प्रौद्योगिकी कंपनियाँ, नागरिक समाज और राज्य सभी की साझा जिम्मेदारी है कि वे जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार की संस्कृति विकसित करें। महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता कानूनी अधिकारों को व्यावहारिक सुरक्षा में बदलने का माध्यम है। यह उन्हें समय पर शिकायत दर्ज कराने, सूचित निर्णय लेने और डिजिटल स्थानों पर अधिक सुरक्षित ढंग से भाग लेने में सक्षम बनाती है। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल जैसी पहलें ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने की सुविधा देकर रिपोर्टिंग की बाधाओं को कम करती हैं, विशेषकर ऐसी परिस्थितियों में जहाँ सामाजिक संकोच या व्यावहारिक कठिनाइयाँ महिलाओं को पुलिस थाने जाने से रोक सकती हैं। इसी प्रकार, सरकार की मिशन शक्ति जैसी पहलें, जिनमें वन स्टॉप सेंटर और महिला हेल्पलाइन (181) शामिल हैं, हिंसा और संकट का सामना कर रही महिलाओं के लिए संस्थागत सहयोग को मजबूत करती हैं।

सरकार की महिला-नेतृत्व वाले विकास (Women-led Development) की अवधारणा इस पूरे विमर्श को एक व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण से जोड़ती है। उद्देश्य केवल महिलाओं को उभरते डिजिटल जोखिमों से सुरक्षित रखना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि वे भारत के डिजिटल भविष्य को आकार देने में पूर्ण भागीदारी करें। आज महिलाएँ केवल प्रौद्योगिकी की उपभोक्ता नहीं हैं; वे उद्यमी, पेशेवर, नवप्रवर्तक, लोक सेवक और नेतृत्वकर्ता हैं। डिजिटल युग को इन अवसरों का और विस्तार करना चाहिए।

किसी भी कानूनी व्यवस्था की वास्तविक शक्ति केवल इस बात से नहीं मापी जाती कि उसने कितने कानून बनाए हैं, बल्कि इससे मापी जाती है कि एक सामान्य नागरिक उन कानूनों द्वारा दिए गए अधिकारों का कितनी सहजता से प्रयोग कर सकता है। प्रौद्योगिकी ने यह वादा करोड़ों महिलाओं के लिए पहले से अधिक सुलभ बनाया है।

महिला-नेतृत्व वाला विकास केवल यह सुनिश्चित करने तक सीमित नहीं है कि महिलाओं को प्रौद्योगिकी का लाभ मिले। इसका वास्तविक अर्थ यह है कि महिलाएँ भारत के डिजिटल भविष्य को आकार देने में सक्रिय भागीदार बनें तथा उद्यमी, नवप्रवर्तक, लोक सेवक, पेशेवर और सामुदायिक नेतृत्वकर्ता के रूप में। लक्ष्य केवल समावेशन नहीं, बल्कि नेतृत्व है।

# 'त्योहारों और बदलाव' का महीना सितम्बर

**नीलम भागी**

**लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर**


**मा**नसून खत्म, फसल तैयार है और गर्मी कम हो रही है तो हल्की ठंड की शुरुआत होने लगती है। इसलिए सितम्बर को 'त्योहारों और बदलाव' का महीना कहते हैं। सोलंग महोत्सव (1 से 5 सितंबर) अरुणाचल प्रदेश (आदि जनजाति द्वारा) यह एक कृषि उत्सव है। इसमें फसल की देवी किने नाने और पशुओं के देवता दादी बोते की पूजा की जाती है। पारंपरिक नृत्य और सामुदायिक दावतें इसका मुख्य आकर्षण हैं। मोंगमोंग फेस्टिवल (1 से 6 सितम्बर) नागालैंड के ओओ नागा समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला फसल और धन्यवाद उत्सव है । यह नागालैंड के सांताम जनजाति का छह दिवसीय प्रसिद्ध फसल कटाई उत्सव भी है। उत्सव का मुख्य बिंदु 'एकता और हमेशा साथ रहना' है।

कान्हा के जन्म (4 सितम्बर) श्रीकृष्णजन्माष्टमी की खुशी हम ऐसे मनाते हैं जैसे परिवार में बालक का जन्म हुआ हो। मंदिरों में सजावट की जाती है। छोटे-छोटे बच्चों को कृष्ण के बाल रूप में सजाया जाता है। जगह-जगह कीर्तन होते हैं। लोग व्रत रखते हैं और कान्हा के जन्म के बाद व्रत का पारण करते हैं। महाराष्ट्र में जगह-जगह दही हांडी लगाई जाती है। कान्हा के बाल सखा बने युवक इसे फोड़ने की प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। दक्षिण भारत में यह उत्सव 8 दिन तक मनाया जाता है। श्री कृष्णजन्माष्टमी के ठीक अगले दिन आता है, गोगा नवमी का पावन पर्व, 5 सितंबर को मनाया जाएगा। इस दिन वीर गोगाजी (जाहरपीर) की पूजा की जाती है, जिन्हें सांपों से रक्षा करने वाला लोक देवता माना जाता है। भक्तगण अपने परिवार की रक्षा और कल्याण के लिए व्रत रखते हैं।

बैल पोला का पारंपरिक त्योहार 10 सितंबर (श्रावण अमावस्या) को मनाया जाएगा। मवेशियों का उपकार मानना, हमारी भारतीय संस्कृति में अलग अलग रूपों में दिखाई देता है। मसलन पोला महोत्सव महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, कर्नाटक के किसानों द्वारा मनाया जाता है। इस त्यौहार की तैयारी में बैलों को नहलाकर, उनकी तेल से मालिश करना, सींगों को रंग कर, नई लगाम और रस्सियाँ बदली जाती हैं। उन्हें शॉल, घंटियों और फूलों से सजाया जाता है। किसान परिवारों द्वारा खेती में बैलों के अमूल्य योगदान के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मनाया जाने वाला एक प्रमुख उत्सव है और बच्चे मिट्टी या लकड़ी से बने नंदी बैल को सजाकर यह पर्व मनाते हैं।

नीलमपेरूर पडायनी (11 सितंबर) केरल के अलप्पुझा जिले में भगवती मंदिर में पारंपरिक कला और सांस्कृतिक अनुष्ठान के रूप में मनाया जाता है। वराह जयंती (13 सितंबर) को मनाई जाएगी। यह दिन भगवान विष्णु के तीसरे (वराह) अवतार को समर्पित है। भगवान विष्णु ने पृथ्वी को बचाने के लिए यह रूप लिया था।

उत्तर भारत में महिलाओं का उत्सव हरतालिका तीज और दक्षिण भारत में इस व्रत को 'गौरी हब्बा' (14 सितम्बर) के नाम से जाना जाता है। इस त्यौहार में प्रकृति ने हरियाली की चादर ओढ़ी होती है। इस दिन को भोलेनाथ और माता पार्वती के पुनर्मिलन का दिन माना जाता है। हरे भरे पेड़ो पर झूले पड़ जाते हैं। कहीं कहीं यह उत्सव तीन दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन मायके से सिंधारा में घेवर मिठाई, मेहंदी, चूड़ियां आदि सुहाग की चीजे आतीं हैं। दूसरे दिन मेहंदी हाथ पैरों में लगाई जाती है। अगले दिन सौभाग्यवती महिलाएं निर्जला व्रत कर, पकवान बनाती हैं और हरी पोशाक पहने, श्रृंगार करके पति की लंबी आयु के लिए शिव पार्वती की पूजा कर, सास को बायना देती हैं। गौरी हब्बा गणेश चतुर्थी से एक दिन पूर्व मनाया जाता है।

गणेशोत्सव (14 से 25 सितम्बर) दस दिन महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु गणपतिमय रहता है। बप्पा के आवाहन से लेकर विर्सजन तक श्रद्धालु, आरती, पूजा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, लगभग सभी उपस्थित रहते हैं। घरों में भी गणपति 1,3,5,7,9 दिन बिठाते हैं। इसमें गौरी पूजन, दो दिन महालक्ष्मी पूजन, छप्पन भोग हैं। त्यौहार के बीच में बेटियां भी गणपति से मिलने मायके आती हैं और बहुएं भी मायके जाती हैं। अष्टमी को ऐसा माना जाता है कि इस दिन

गौंरा अपने गणपति से मिलने आती हैं। उपवास रखकर, कुल्हड़ गुड़ियों के रुप में गौरी को पूजते हैं और सबको भोजन कराते हैं। दक्षिणा उपहार देते हैं पर उस दिन नियम है कुछ भी, जूठन (सभ्य लोग हैं जूठा नहीं छोड़ते) तक नहीं फेंकते। यहां तक कि पान खिलाया तो उसका कागज भी दहलीज से बाहर नहीं डालते। अगले दिन दक्षिणा उपहार ले जा सकते हैं। शाम को आरती के बाद कीर्तन होता है। मंगलकारी बप्पा साल में एक बार तो आते हैं इसलिए उनके सत्कार में कोई कमी न रह जाए। अपनी सामर्थ्य के अनुसार मोदक, लड्डू के साथ तरह तरह के व्यंजनों का भोग लगाते हैं। आनंद चर्तुदशी के दिन गणपति विर्सजन होता है। नाचते हुए गणपति से विनती करते हुए कहते हैं कि अगले बरस तूं जल्दी आ और विर्सजन जूलूस में जाते हैं।

गणपति विसर्जन की कथाएं बड़ी रोचक हैं। महर्षि वेदव्यास महाभारत की कथा लिखना चाह रहे थे पर उनके विचार प्रवाह की रफ्तार से, कलम साथ नहीं दे रही थी। उन्होंने गणपति से लिखने को कहा। उन्होंने लिखना स्वीकार किया पर पहले तय कर लिया कि वे लगातार लिखेंगे, जैसे ही उनका सुनाना बंद होगा, वह आगे नहीं लिखेंगे। महर्षि ने भी गणपति से प्रार्थना कर, उन्हें कहा,'' आप भी एडिटिंग साथ-साथ करेंगे।'' गणपति ने स्वीकार कर लिया। जहां गणपति करेक्शन के लिए सोच विचार करने लगते, तब तक महर्षि अगले प्रसंग की तैयारी कर लेते। वे लगातार कथा सुना रहे थे। दसवें दिन जब महर्षि ने आखें खोलीं तो पाया कि गणपति के शरीर का ताप बढ़ गया है। उन्होंने तुरंत पास के जलकुंड से जल लाकर उनके शरीर पर प्रवाहित किया। उस दिन भाद्रपद की चतुर्दशी थी। इसी कारण प्रतिमा का विर्सजन चतुर्दशी को किया जाता है। महाराष्ट्र इसे मंगलकारी देवता के रूप में व मंगलपूर्ति के नाम से पूजता है।

सृजन, निर्माण, वास्तुकला, औजार, शिल्पकला, मूर्तिकला एवं वाहनों के देवता विश्वकर्मा की जयंती (17 सितम्बर) को मनाई जायेगी। कारीगरों का यह उत्सव का दिन है। सब एक जगह इक्कट्ठा होकर पूजा करते हैं और फिर मूर्ति का विर्सजन करते हैं।

ऋषि पंचमी (15 सितंबर) इस दिन सप्तऋषियों (कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ) की पूजा की जाती है। बलराम जयंती (हल षष्ठी / ललही छठ) , 16 सितंबर को मनाई जाएगी। मीनाक्षी अम्मन मंदिर कुंभाभिषेकम (17 सितंबर) : मदुरै, तमिलनाडु में ऐतिहासिक मीनाक्षी अम्मन मंदिर का यह विशेष अनुष्ठान लगभग 17 साल के अंतराल के बाद आयोजित हो रहा है।

राधाष्टमी (18 सितम्बर) का त्योहार परंपरागत रूप से ब्रज, बरसाना, मथुरा वृंदावन के आसपास के क्षेत्र के साथ उत्तर भारत में मनाते हैं। मंदिरों में कीर्तन का आयोजन किया जाता है। महान शास्त्रीय संगीतकार, संगीतज्ञों के आराध्य, ध्रुपद के जनक, स्वामी हरिदास का जन्म भी इसी दिन हुआ था। बैजू बावरा, तानसेन जैसे दिग्गज संगीतज्ञ उनके शिष्य थे। इनके जन्मोत्सव पर विश्वभर के शास्त्रीय संगीतज्ञ उन्हें भावांजलि देने, स्वामी हरिदास संगीत एवं नृत्य महोत्सव में आते हैं।

लेह लद्दाख महोत्सव (20 से 25 सितम्बर) का मुख्य उद्देश्य लद्दाख की समृद्ध सांस्कृतिक, विरासत और परंपरा को पुर्नजीवित कर देश दुनिया के सामने लाना है। सात दिवसीय यह उत्सव जम्मू-कश्मीर पर्यटन, स्थानीय समुदायों जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित किया जाता है। लेह के विभिन्न क्षेत्रों से मंडलियां, स्थानीय नेता, स्कूली बच्चे और नर्तक पारंपरिक पोशाक में शामिल होते है। सब धुनों पर नृत्य करते चलते हैं।

हेइक्रू हिदोंगबा (२२ सितंबर) मणिपुर तिथि (पारंपरिक चंद्र कैलेंडर के अनुसार) विशेषतः यह एक ऐतिहासिक और धार्मिक नौका दौड़ उत्सव है। इसमें लंबी और संकीर्ण नावों पर सवार होकर लोग पारंपरिक अनुष्ठान व प्रतियोगिता करते हैं। वामन जयंती (वामन द्वादशी 23 सितंबर) को है। इस दिन भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया था। इस दिन भगवान विष्णु के पांचवें वामन रूप की पूजा की जाती है।

जीरो फेस्टिवल ऑफ म्यूजिक (24 से 27 सितंबर) जीरो वैली, अरुणाचल प्रदेश में यह भारत का सबसे बड़ा आउटडोर इंडी म्यूजिक फेस्टिवल है। इस उत्सव को बांस के बने मंचों और इको-फ्रेंडली तौर-तरीकों से आयोजित किया जाता है। अरुणाचल प्रदेश के जीरो घाटी में होने वाला प्रसिद्ध इंडी-म्यूजिक और सांस्कृतिक उत्सव है ।

मिम कुट मिजोरम (कुकी-चिन-मिजो समुदाय) का मक्का की फसल के स्वागत से जुड़ा एक प्राचीन उत्सव है, जिसमें गीत-संगीत और लोक नृत्य किए जाते हैं। आमतौर पर उत्सव का दिन सितंबर के महीने की शुरुआत (निश्चित तिथि फसल और स्थानीय पंचांग पर निर्भर करती है) में मक्के की फसल की कटाई के बाद मनाया जाता है।

हिन्दू धर्म में पितृ पक्ष (26 सितम्बर से 10 अक्तूबर) का विशेष महत्व है। मान्यता है कि यमराज श्राद्ध पक्ष में पितरों को मुक्त कर देते हैं ताकि वे स्वजनों के यहां जाकर तर्पण ग्रहण कर सकें। पितरों के निमित्त किए गए तर्पण से पितर, तृप्त होकर वंशजों को आर्शीवाद देते हैं। जिससे जीवन में सुख समृध्दि प्राप्त होती है। अमावस को पितृ विर्सजन करते हैं।

'त्योहारों और बदलाव' का महीना है न सितम्बर।

# बंदूक से हैंडलूम तक

**मधू सिंह**
**लेखिका**

नारी को हमने न जाने कितने रूपों में देखा है। कभी सृष्टि की धड़कन बनी, कभी ममता की गोद बनी और कभी चूल्हे की आँच पर अपने सपने सेंकती हुई दिखाई दी। कभी खेत की मिट्टी में अपनी हथेलियाँ गाड़ती हुई मिली, तो कभी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हुई वीर योद्धा बनी और कभी अन्याय के सामने मुट्ठी भींचकर हथियारबंद काल बनकर खड़ी हुई। उसके हाथों ने पालना भी झुलाया, हल भी थामा और जब समय की माँग हुई तो हथियार भी उठाया।

'बस्तर' का नाम सुनते ही जो पहली तस्वीर जेहन में उभरती है, वह है घना जंगल, गोलियों की आवाज और खौफ का साया। दशकों से यह इलाका हिंसा और उग्रवाद की चुनौती से जूझता रहा है। इस हिंसा और उग्रवाद भरे माहौल में सबसे अधिक कीमत अगर किसी ने चुकाई है, तो वह यहाँ की बेटियाँ हैं। कम उम्र में कभी परिस्थितियों से विवश होकर, कभी बहकावे में आकर और कभी संगठन के प्रभाव में आकर उनके हाथों में बंदूक आ गई। जिस उम्र में हाथों में किताबें होनी चाहिए थीं, उस उम्र में उनकी उँगलियाँ बंदूक के ट्रिगर पर घूमने लगीं। ऐसे में उनकी पढ़ाई छूटी, बचपन छूटा, अपने छूटे और बहुत पीछे छूट गई एक सामान्य जिंदगी जीने की इच्छा।

7 अगस्त 2026, राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर रायपुर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित बुनकर सम्मेलन में बस्तर की आत्मसमर्पित पूर्व महिला नक्सलियों ने रैंप वॉक किया। कभी जंगल की पगडंडियों पर जिनके कदमों की आहट के साथ बंदूकें चलती थीं, आज उन्हीं कदमों की थाप पर रैंप सजा था। कभी जिन हाथों में हिंसक संघर्ष का हथियार था, आज उन्हीं हाथों में हैंडलूम का नाजुक धागा था। और उस 'धागे-धागे में ये महिलाएँ अपनी पहचान और अपना आत्मसम्मान बुन रही थीं।' यह दृश्य देखकर मन भावुक हो गया।

एक स्त्री के भीतर जब आत्मविश्वास जागता है, तो ऐसे महानतम पल जन्म लेते हैं। तब वह अपने संघर्ष को सृजन में और अपनी पहचान को सम्मान में बदल देती है। बस्तर की ये पूर्व नक्सली महिलाएँ आज वही कर रही हैं। लेकिन मैं कभी-कभी सोचती हूँ इन स्त्रियों के लिए आत्मसमर्पण का फैसला कितना कठिन रहा होगा?

आत्मसमर्पण के बाद की जिंदगी कैसी होगी? समाज उन्हें स्वीकार करेगा या नहीं? उनके कमाने का जरिया क्या होगा? आगे की जिंदगी कैसे चलेगी? उनके बच्चों का भविष्य क्या होगा? उनके सामने शायद ऐसे अनगिनत सवाल रहे होंगे। यह सचमुच अंधेरे में तीर चलाने जैसा फैसला रहा होगा।

लेकिन पुनर्वास की सरकारी नीतियों और पुलिस-प्रशासन के प्रयासों के तहत आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को नई जिंदगी शुरू करने के लिए कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। कई महिलाओं ने अलग-अलग हुनर सीखे और सम्मान के साथ अपने पैरों पर खड़े होने की राह पकड़ी। इसी सिलसिले ने उन्हें हैंडलूम और फिर उस रैंप तक पहुँचाया।

फेमिना मिस इंडिया छत्तीसगढ़ की प्रतिभागियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती इन बेटियों को देखकर मन गर्व से भर गया।

यह दृश्य केवल एक फैशन शो नहीं था। यह एक प्रतीक था। एक घोषणा थी। हिंसा की भाषा अब खामोश हो रही है और उसकी जगह हुनर, सम्मान और सृजन की भाषा ले रही है।

जो हाथ कभी बंदूक चलाने के आदी थे, वही हाथ आज कपड़ा बुनना, राजमिस्त्री का काम सीखना, बाजार और कारोबार संभालना और अपने पैरों पर खड़ा होना सीख रहे हैं। उनके चेहरों की मुस्कान में उनका लौटता हुआ आत्मविश्वास साफ दिखाई देता है।

पुनर्वास केवल हथियार छीन लेने से पूरा नहीं होता। पुनर्वास तब पूरा होता है, जब समाज उन्हें स्वीकार करे, उन्हें सम्मान दे और उन्हें एक नई शुरुआत का अवसर दे।

बंदूक से हैंडलूम तक का यह सफर बेशक बहुत कठिन रहा होगा, लेकिन आज रैंप पर चलती हुई इन बेटियों के कदम सिर्फ बस्तर के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए उम्मीद की एक नई इबारत लिख रहे हैं। बस्तर की इन आदिवासी महिलाओं के ऊपर यह पंक्तियां बहुत सटीक बैठती हैं

'स्त्री शक्ति है,वह सृष्टि है यदि उसे संचालित करने वाला व्यक्ति योग्य है; वह विनाश है यदि उसे संचालित करने वाला व्यक्ति अयोग्य है।' (भगवती चरण वर्मा)

बस्तर की इन बेटियों ने साबित कर दिया स्त्री को यदि दिशा मिल जाए तो उनके वही विनाशकारी हाथ जो कभी हथियार उठाने को विवश थे, सृजन का धागा भी थाम सकते हैं।

# राष्ट्र सेवा के लिए जीवन समर्पित

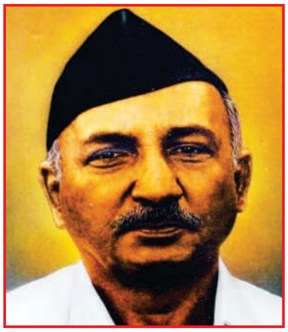

दक्षिण भारत में संघ कार्य के विस्तार में आजीवन रत रहने वाले यादव कृष्ण जोशी का जन्म 3 सितम्बर, 1914 को नागपुर में हुआ था। डॉ. हेडगेवार जी से यादवराव का बहुत निकट सम्बन्ध था क्योंकि वह डॉ. जी के घर पर ही रहते थे। राष्ट्र सेवा का भाव लिए वह एक श्रेष्ठ शास्त्रीय गायक भी थे। इसलिए उन्हें संगीत का बाल भास्कर/ बुटली भट्ट (छोटू पंडित) भी कहा जाता था। बता दें कि संघ में संस्कृत प्रार्थना की शुरुआत और पहले गायन में उनकी भूमिका सर्वोपरि रही है। इसके अलावा संघ के अनेक गीतों के स्वर भी उन्होंने ही बनाये। बाद में प्रचारक के नाते कुछ दिन के लिए झांसी में रहे। तत्पश्चात उन्होंने कर्नाटक प्रांत प्रचारक के रूप में दायित्वों का निर्वहन भी किया। इसके बाद क्रमशः दक्षिण क्षेत्र प्रचारक, अ.भा.बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख, सेवा प्रमुख तथा सह सरकार्यवाह रहे। साथ ही दक्षिण में पुस्तक प्रकाशन, सेवा, संस्कृत प्रचार आदि के पीछे उनकी ही प्रेरणा और महत्वपूर्ण भूमिका थी। उनके नेतृत्व में कर्नाटक में कई बड़े और और ऐतिहासिक कार्यक्रम भी हुए। जैसे 1983 में धर्मस्थान में वि.हि.परिषद का द्वितीय प्रांतीय सम्मेलन, जिसमें 70,000 प्रतिनिधि तथा एक लाख पर्यवेक्षक शामिल हुए। विवेकानंद केन्द्र की स्थापना में भी उनका सराहनीय योगदान है। इस तरह राष्ट्र की सेवा में रहते हुए 20 अगस्त, 1992 को बंगलौर संघ कार्यालय में उनका निधन हो गया। ■

# बहुआयामी प्रतिभा के धनी

भारतीय संस्कृति, धर्म, परम्परा एवं दर्शन की आधुनिक एवं विज्ञानसम्मत व्याख्या कर पूरे विश्व को भारतीय दर्शन और संस्कृति से परिचित कराने वाले महान व्यक्ति थे प्रख्यात दर्शनशास्त्री, प्राध्यापक एवं राजनेता डॉ. राधाकृष्णन। उनका जन्म 5 सितम्बर 1888 को ग्राम प्रागानाडु, जिला चित्तूर, तमिलनाडु में हुआ था। बचपन से ही हिन्दू धर्म एवं दर्शन में रुचि के चलते बाद में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए। गौरतलब है कि 1926 में डॉ. राधाकृष्णन ने विश्वविख्यात हार्वर्ड विश्वविद्यालय में आयोजित दर्शनशास्त्र सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उस प्रवास में विश्वविद्यालय के अलावा अनेक स्थानों पर भी दिये व्याख्यान ने पूरे विश्व को भारतीय दर्शन और प्रतिभा का लोहा मानने पर मजबूर कर दिया। वह आन्ध्र विश्वविद्यालय तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। साथ ही वह यूनेस्को अधिशासी मण्डल और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने भारतीय शिक्षा पद्धति में सुधार के सम्बन्ध में ठोस सुझाव दिये। साल 1946 में जब वह संविधान सभा का सदस्य थे तब उन्होंने अपने पहले ही भाषण में 'स्वराज्य' शब्द की दार्शनिक व्याख्या कर सबको चकित कर दिया। इसके अलावा वह साल 1949 में वे सोवियत संघ में भारत के राजदूत और 1952 में देश के पहले उपराष्ट्रपति तथा 1962 में राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया। 1954 में उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। ■

# एकात्म मानववाद के प्रणेता

अभाव के बीच रहकर शिखर को छूने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय ऐसी ही विभूति थे, जिन्होंने समाज के लिए परिवर्तनकारी दर्शन दिया। 25 सितम्बर, 1916 को जयपुर से अजमेर मार्ग पर स्थित ग्राम धनकिया में जन्मे दीनदयाल जी बचपन से ही मेधावी थे। कानपुर में ही उनका सम्पर्क संघ के उत्तर प्रदेश के तत्कालीन प्रचारक भाऊराव देवरस से हुआ। इसके बाद वह आजीवन समाज और राष्ट्र सेवा में रत रहे। उनका प्रचारक जीवन 1942 से लखीमपुर, उ.प्र. से प्रारम्भ हुआ। बाद में वह उत्तर प्रदेश के सह प्रान्त प्रचारक भी रहे। मुस्लिम तुष्टिकरण के दौर में जब एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल की आवश्यकता थी तो उन्होंने संघ के तत्कालीन सरसंघचालक गुरुजी की प्रेरणा से श्यामाप्रसाद मुखर्जी को सहयोग किया। और इस प्रकार 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना हुई। दीनदयाल जी प्रारम्भ में उसके संगठन मंत्री और फिर महामंत्री बने। वह एक कुशल संगठक, वक्ता, लेखक, पत्रकार और चिन्तक भी थे। लखनऊ में राष्ट्रधर्म प्रकाशन की स्थापना उन्होंने ही की थी। उन्होंने एकात्म मानववाद के नाम से राष्ट्र को नया आर्थिक एवं सामाजिक चिन्तन दिया, जो साम्यवाद और पूंजीवाद की विसंगतियों से ऊपर उठकर देश को सही दिशा दिखाने में सक्षम है। इस तरह पूरे देश में राष्ट्रीय भाव जगाने वाले दीनदयाल जी 11 फरवरी, 1968 मुगलसराय में राष्ट्र विरोधियों की साजिश के शिकार हुए। ■

# आधुनिकता की दौड़ में कहीं खो न जाए हमारी संस्कृति

छाया सिंह
लेखिका

आज का समय तेजी से बदल रहा है। विज्ञान, तकनीक और आधुनिक जीवन ने हमारी जिंदगी को पहले से कहीं अधिक सुविधाजनक बना दिया है। बच्चों के हाथों में महंगे मोबाइल हैं, घरों में इंटरनेट है, और शिक्षा के नए-नए साधन उपलब्ध हैं। यह बदलाव आवश्यक भी है, क्योंकि समय के साथ आगे बढ़ना जीवन का नियम है। लेकिन इस दौड़ में हम अपनी परंपराओं और संस्कारों को धीरे-धीरे पीछे छोड़ते जा रहे हैं।

कुछ दशक पहले तक हर सुबह लोगों के घरों में मंदिर की घंटी और आरती की मधुर आवाज सुनाई देती थी। बच्चे अपने माता-पिता और दादा-दादी के साथ पूजा करते थे। बड़े-बुजुर्ग रामायण, महाभारत और धार्मिक कथाएं सुनाते थे। त्योहार केवल छुट्टी का दिन नहीं होते थे, बल्कि पूरे परिवार के साथ मिलकर खुशियां बांटने का अवसर होते थे।

आज के समय में तस्वीर बदल रही है। सुबह उठते ही सबसे पहले मोबाइल देखा जाता है। परिवार के लोग एक ही घर में रहते हुए भी अलग-अलग स्क्रीन में व्यस्त हैं। त्योहारों की खुशी भी अब कई बार सोशल मीडिया पर फोटो और स्टेटस तक सीमित होकर रह गई है। पूजा-पाठ और पारिवारिक परंपराओं के लिए समय निकालना लोगों को कठिन लगने लगा है। यह चिंता केवल धर्म की नहीं, बल्कि संस्कारों की भी है। बच्चे वही सीखते हैं जो वे अपने घर में देखते हैं। यदि घर में बड़ों का सम्मान, प्रार्थना, संयम, सेवा और परिवार के साथ समय बिताने की परंपरा होगी, तो वही गुण बच्चों के जीवन का हिस्सा बनेंगे। लेकिन यदि उनका अधिकांश समय केवल मोबाइल, इंटरनेट और आभासी दुनिया में बीतेगा, तो वे अपनी जड़ों से दूर होते चले जाएंगे।

भारतीय संस्कृति हमें केवल पूजा करना नहीं सिखाती, बल्कि जीवन जीने का सही तरीका भी सिखाती है। यह हमें माता-पिता का सम्मान करना, प्रकृति की रक्षा करना, सत्य बोलना, ईमानदारी से काम करना, जरूरतमंद की सहायता करना और सभी के प्रति प्रेम का भाव रखना सिखाती है। यही मूल्य एक अच्छे इंसान और एक मजबूत समाज की पहचान हैं। आधुनिक शिक्षा और नई तकनीक का विरोध नहीं किया जा सकता। बच्चों को अच्छी शिक्षा, विज्ञान और डिजिटल ज्ञान अवश्य मिलना चाहिए। लेकिन इसके साथ-साथ उन्हें अपनी भाषा, अपने त्योहार, अपनी परंपराएं और अपने देश की महान सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान भी मिलना चाहिए। आधुनिकता और संस्कृति एक-दूसरे की विरोधी नहीं हैं। दोनों साथ-साथ चल सकती हैं, यदि हम संतुलन बनाए रखें।

घर में रोजाना कुछ मिनट की सामूहिक प्रार्थना, सप्ताह में एक दिन धार्मिक या प्रेरणादायक कथा सुनना, बच्चों को त्योहारों का महत्व समझाना, दादा-दादी के साथ समय बिताने के लिए प्रेरित करना और परिवार के साथ बैठकर भोजन करना ये छोटी-छोटी आदतें बच्चों के जीवन में बड़े संस्कार पैदा कर सकती हैं। हमें यह भी समझना होगा कि संस्कृति केवल मंदिर जाने तक सीमित नहीं है। संस्कृति हमारे व्यवहार, हमारी भाषा, हमारे विचार, हमारे रिश्तों और हमारी जीवनशैली में दिखाई देती है। जब हम बड़ों का सम्मान करते हैं, छोटों से प्रेम करते हैं, सत्य का साथ देते हैं और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं, तभी हम वास्तव में अपनी संस्कृति को जीवित रखते हैं। यदि आज हमने अपनी आने वाली पीढ़ी को केवल धन-दौलत और आधुनिक सुविधाएं देकर छोड़ दिया, उन्हें अच्छे संस्कार नहीं दिए, तो भविष्य में वे आर्थिक रूप से सफल तो हो सकते हैं, लेकिन जीवन के असली मूल्यों से दूर हो जाएंगे। कोई भी समाज केवल इमारतों, तकनीक या धन से महान नहीं बनता। उसकी असली ताकत उसके संस्कार, उसके परिवार और उसकी संस्कृति होती है।

आइए, आज ही से एक छोटा-सा संकल्प लें। हम अपने बच्चों को आधुनिक बनाएंगे, उन्हें अपनी जड़ों से भी जोड़े रखेंगे। उन्हें सफलता के साथ संवेदनशीलता, ज्ञान के साथ विनम्रता और आधुनिकता के साथ भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत भी देंगे। क्योंकि जब संस्कृति बनी रहेगी, तभी संस्कार लोगों में रहेंगे। और तभी हमारा परिवार, हमारा समाज और हमारा देश अपनी पहचान के साथ आगे बढ़ता रहेगा।

अपनी संस्कृति को केवल याद न करें, बल्कि उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाए। यही हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी और आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे अनमोल उपहार है।

विद्या भारती विद्यालय

# सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज

## ऊर्जाविहार , ऊँचाहार रायबरेली

### हमारा उद्देश्य

- ❖ 1. राष्ट्रीयता की भावना का विकास
- ❖ 2. चरित्र निर्माण
- ❖ 3. सांस्कृतिक विकास
- ❖ 4. ज्ञानात्मक विकास

### वैशिष्ट्य

1. माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा 'A' ग्रेड मान्यता प्राप्त
2. माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा शिशु से द्वादश तक विज्ञान वर्ग की मान्यता।
3. सहशिक्षा।
4. प्रशिक्षित व अनुभवी आचार्यों द्वारा पंचमुखी शिक्षा के लिए पंचपदीय शिक्षण पद्धति का प्रयोग।
5. भौतिक विज्ञान, रसायन, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान की सुव्यवस्थित प्रयोगशालायें।
6. संगीत कक्ष व योग कक्ष की व्यवस्था।
7. वर्तमान में 1400 छात्र-छात्रा अध्ययनरत।
8. सम्पूर्ण परिसर CCTV कैमरा युक्त।
9. दूरस्थ क्षेत्रों के लिए वाहन सुविधा।
10. परीक्षाफल शत्-प्रतिशत प्रथम एवं ससम्मान।
11. खेलकूद एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अग्रणी स्थान।
12. दायित्व बोध के लिए छात्र संसद, छात्र न्यायालय आदि।
13. 2025-26 में प्रदेश में आठवाँ व जिला सूची में पहला दूसरा तीसरा चौथा व सातवाँ स्थान प्राप्त।
14. सुव्यवस्थित छात्रावास सुविधायें (सीमित संख्या में)
15. पुस्तकालय एवं वाचनालय की समुचित व्यवस्था।
16. शिक्षाप्रद एवं अनुशासित वातावरण।

### प्रबन्ध समिति

**श्री राजेश सिंह**
अध्यक्ष

**श्री डी. पी सिंह**
प्रबंधक

**श्री आर पी बॉथम**
कोषाध्यक्ष

**श्री दीपक कुमार सिंह**
प्रधानाचार्य

सम्पर्क सूत्र :- 9450916463 9936153470

हमारा संकल्प - संस्कार, शिक्षा, सेवा

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2026-27-28

# प्रेरणा विमर्श 2026

## उत्कर्ष

### नारी सम्मान, युवा स्वाभिमान

**विकसित भारत की दिशा में महिलाओं एवं युवाओं के योगदान पर विचार मंथन**

**19 सितम्बर 2026 (शनिवार)**

## उद्घाटन एवं नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ

⏰ अपराह्न 3 बजे से सायं 5.30 बजे तक

प्रदर्शनी उद्घाटन, प्रेरणा विमर्श पत्रिका विमोचन एवं नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ

**20 सितम्बर 2026 (रविवार)**

## वैचारिक मंथन

⏰ प्रातः 10:00 बजे से मध्याह्न 12:00 बजे तक

### स्वाभिमानी नारी, सशक्त भारत

**समानांतर सत्र : 1**

विकसित भारत का संकल्प महिलाओं की पूर्ण और समान भागीदारी के बिना अधूरा है। वो आज हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान रच कर रही हैं। फिर भी बड़ी संख्या में महिलाओं को मुख्यधारा से जोड़ना अभी बाकी है। महिला सशक्तीकरण, उनके बहुआयामी योगदान और राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका पर विशिष्ट वक्ताओं के साथ सार्थक संवाद।

### युवा सोच, नया भारत

**समानांतर सत्र : 2**

युवा राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति हैं। क्या वे सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं? क्या उनमें समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध है? AI के दौर में सकारात्मक सोच और नवाचार के साथ युवाओं को राष्ट्र निर्माण का सशक्त भागीदार कैसे बनाया जाए—इन्हीं महत्वपूर्ण विषयों पर विशिष्ट वक्ताओं के साथ सार्थक विचार-मंथन।

## समापन समारोह

⏰ अपराह्न 3:00 बजे से सायं 5:30 बजे तक

- ♦ सभागार में प्रवेश : अपराह्न 2.00 बजे से पूर्व, अतिथि आगमन : अपराह्न 3 बजे
- ♦ प्रवेश के लिए निमंत्रण पत्र/प्रवेशिका अनिवार्य है।

**आयोजक : प्रेरणा विमर्श आयोजन समिति 2026**
**प्रेरणा शोध संस्थान न्यास एवं गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय (GBU)**

**निवेदक**

अध्यक्ष : अनिल त्यागी (9810066111) कार्यकारी अध्यक्ष : बृजेंद्र गुप्ता (9811210986) सचिव : मोनिका चौहान (9810854218) संयोजक : श्याम किशोर (9811077950)

प्रेरणा कार्यालय : 9354133708 ईमेल : prernavimarsh2026@gmail.com

📍 स्थान: गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

आप इस पावन अवसर पर सादर आमंत्रित हैं

नोट : ♦ 20 सितम्बर 2026 के प्रातः 10.00 बजे से मध्याह्न 12.00 बजे तक समानांतर सत्रों के लिए रजिस्ट्रेशन करें। शुल्क ₹ : 100/-
♦ नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ व समापन समारोह के लिए रजिस्ट्रेशन की आवश्यकता नहीं है।